सारंगराय के मारे जाने पर परिहार बीरों का पराक्रम करना।

परत भोमि सारंग। गुरज बज्जिय सिर गोरिय॥
बज्ज बीर कर बज्ज। बज्ज अग्गे वर जोरिय॥
सस्च घात आघात। कट्टि कुठ्ठर ग्रहि तारं॥
धव्वै पति तब बिंटि। मेछ लगि असिवर भारं॥
परिहार परिग्गह सोमि सम। फेरि राज पारस परिय॥
चहुआन बीर संमुह असुर। गह गह गोरी उच्चरिय॥
छं० ॥ १३४२ ॥

सुनि गह गह सुबिहान। भाव भर मान रुष्पि हुय॥
चरन अचल चल हथ्थ। चित तिहि निह निहचल कय॥
सस्च तेज नम जुत्त। दूंत कहै मतवा रुनं॥
होउ अस्तुति उच्चार। घुहय नंषै सुरताउनि॥
पितभार ध्रम्म जल साभि कै। धार असीधर धार बर॥
बुड्यौ विंव पामार भर। प्रकृति बुझै नन अप्प कर॥
छं० ॥ १३४३ ॥

परत षेत पामार एन। बर धार धार चढ़ि॥
बर द्रोपति जिम चीर। सत्त त्रेखी सुरंग बढ़ि॥
बर गोरी बै सेन। प्रंव क्रम मग्ग चलावै॥
परि प्रातस चहुआन। फिरत छिन मग्ग छुड़ावै॥
साध्रम्म सग्ग जिहि बंधयो। सो धार धार होय उत्तरिय॥
चंपयौ फेरि गोरी गरुअ। फेरि राज पारस परिय॥
छं० ॥ १३४४ ॥

दूहा ॥ कटि मंडल सहसेन वर। उभै परिग्गह राज॥
गई आस गोरी गहन। गहन मोह गह आज॥
छं० ॥ १३४५ ॥

कवित्त ॥ उभै बंध परिहार। सन दुहु मग्ग समाहो॥
दल घव्यौ प्रथिराज। बल न घव्यौ बलघाई॥

बार बेर चहुआन । साहि मुष चढ़ि गज चढ्ढी ॥
पज्ज पट्ट तिन छीन । आय अंत्तर अंगं बढ्ढी ॥
फिरि वाम मग्ग उब्भौ न्त्रपति । है हक्कै चल्लै नही ॥
सधयान कंत कौ नीर ज्यौं । कछु अग्या भंजै जही ॥
छं० ॥ १३४६ ॥

परत मीर मारुत्त । वीर बज्जिय सुरतानह ॥
देव भूंमि दस मान । जानि जांनीहि रसानह ॥
एक राय दस षान । धांन घुंटिय धर षग्गह ॥
आसमान अच्छरिय । भयौ कोतूहल मग्गह ॥
सुर कहियं ससीहर आपनौ । अप अपलोक सुपन्नौ ॥
बर बीर बीर सिंत कंत सहु । जानि सुहागिन सुपन्नौ ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

सब हिन्दू या मुसलमान वीरों की बहादुरी ।

सारंग सारंग रूप । मिले दसषान महोमद ॥
यौं गज्जयौ गुर रत्न । जंत मुनि हक्क गरुअ सद्द ॥
षग बंबरि उच्छारि । ढारि हत्थर पत्थारं ॥
सार श्रीन झंझुरिय । नष्ष प्राक्रम्म सत्थारं ॥
तानीयं कहं जगदीस दिय । सुष सुमुद्धि संभर धनिय ॥
आवलोक लोक मंडल गयौं । धरकि हंस एकह मनिय ॥
छं० ॥ १३४८ ॥

षूब षान तत्तार । षूब मारू महनंसिय ॥
षूब षान आषूब । जैन सध्यौ रन गंसिय ॥
षूब ध्रम्म सामित्त । षब सिर तेग प्रहारिय ॥
नाहर राइ नरिंद । परिय पष्षर प्राहारिय ॥
उदिहार हिन्दु साहिब सुदिन । बह भोरी बह षेत मुअ ॥
ढालंक नेज नीसान ढरि । सेन सयन मंडी सुभुअ ॥
छं० ॥ १३४९ ॥

दूहा ॥ गिरिजा सुन पुच्छिय गुपत । सुनिय सुपुष्ष निधान ॥

जुद्ध भरिय लग्गिय लरत । चाहुआन सुरतान ॥

छं० ॥ १३५० ॥

दुतिया सोमवार का युद्ध समाप्त।

कवित्त ॥ दुतिय दिवस संग्रम । धाम धर्धरिय दिसि उत्तर ॥
देवराज दौलति पान । जुट्टिय रन दुस्तर ॥
दुअौं राय सामिन्त । मुंह मुंह झरि झरि आवध ॥
सिर सिर सिर तुट्टंत । तंति बज्जिय सुरगावध ॥
कथ कमल केलि कमला पतिय । दुअग दच्छि दुसह कथिय ॥
सुनि सुनि श्रवन्न जट धर जुगह । भुगति मंगि नंदि पारथिय ॥

छं० ॥ १३५१ ॥

सूर बीर बन सिंघ । धीर जिहि धर उत्तारिय ॥
मिच्छवान सुरतान । जोह लाहौर उबारिय ॥
ता पौरुष परतष्षि । दुष्षि अष्षर कवि चंदह ॥
देवासुर दलन हिय । भिरिय मुअ पेर भुज दंडह ॥
आवरत रीठि नन पिट्ठ दिय । पहर एक बज्जिय विषम ॥
जम जुरन हथ्थ लग्गिय न कछु । सूर मंडि मंडल सुषम ॥

छं० ॥ १३५२ ॥

रात्रि व्यतीत होने पर पुनः दोनों सेनाओं का युद्ध आरंभ होना।

गब्बति निसि नंसीय । बज्जि नीसान सवद्धिय ॥
हिंदवान सुरतान । हिंदु धर बर करि सिद्धिय ॥
गय भग्गिय अग्ग लह । सह्ल संभरि संभरयौ ॥
घिन घिन जन जन जुरन । क्षौलि गोरिय मह घरयौ ॥
तद्दिन तुरंग मोहिल मरद । अरुन अरुन मंडल गहिय ॥
सुबकारि चित्त चिचंग पहु । बर विषान रंधह रहिय ॥

छं० ॥ १३५३ ॥

गहकि सेन हिंदुअ नरिंद । चंपौ धरि आवध ॥
तब आए भर दुसह । सीस धारंत सान्नु सुध ॥

सुत्त सुभर सामंत। चवें भर रावर सिंघह॥
तिन दिष्यौ प्रथिराज। जुद्ध रत रष्यंत रिंघह॥
नृप नाईं सीस अम्मर उकसि, हकि सुलग्गे वीर रस॥
उद्दं सुलोह दुष सामि छर। एक तत्त अस्सिय उकसि॥
छं०॥ १३५४॥

पृथ्वीराज के रक्षक सरदारों के नाम, राजपूत सेना के पराक्रम से यवन सेना का विचल पड़ना।

विअष्परी॥ सोल की भीमंह बर बीर। पारिहार दच्छन रनधीर॥
कमधज्जह रयसिंघ महाभर। भाटी अचल अचल आवध भर॥
छं०॥ १३५५॥

विजय राज बघेल गुभभग्ग। मोहन सेंगर रत्त जुद्ध रग॥
मल्हन सायर अरंसो छूर। आए निज पति अग्ग करूर॥
छं०॥ १३५६॥

तीन सुभट रावर नरसिंघ। आए पहु प्रथिराज उरंघ॥
सिलहदार भाषर बरं अंगं। सुअन धाय दुज्जन छल जंगं॥
छं०॥ १३५७॥

षग्ग धार देदंत षंगवासं। आये चपि पहु जंगल पासं॥
बीर करारे आवध बज्जे। भरब्बरि मीर अपुट्ठे भज्जे॥
छं०॥ १३५८॥

परिय भीर देषिय पहु सिंघं। दिय आयस प्रथिराज अरंघं॥
गये छूर दह रावर चड्ढे। आए षोत साठि तमि अड्ढे॥
छं०॥ १३५९॥

षां प्रिरोज नव राजन छूवं। आलम सालम फते अपूवं॥
पीरन रेहन मध्वति मीरं। राजन ताजन हाजन पीरं॥
छं०॥ १३६०॥

तोगन कालन हाजी गाजी। सेरन षान गनी षां न्याजी॥
हासन षां बिरहमषां षानं। गजनी षान दादू षां मानं॥
छं०॥ १३६१॥

मुस्तफ़ पां उम्मर पां अत्तन । को जग षान जलाल समत्तत ॥
हीरन मीरन हेगन दोषन । लाखि नगाखिब ष्रान समोसर्ष ॥
छं० ॥ १३६२ ॥

ए रन मीर एलची षात्तं । तोसुन मूसन सो सन षानं ॥
अलीषान खुरेम सुरेजं । सक्कत षान जलू षां तेजं ॥
छं० ॥ १३६३ ॥

कायम षान मीर जा महदी । ओसन षान अलेवस हद्दी ॥
मत्तौ मार समर सौ अग्गें । मनो कज्जि सिंघं सो लग्गे ॥
छं० ॥ १३६४ ॥

आवध आवध बज्जि अपारं । सेलहि सेल सौं झारे सारं ॥
झलसी भर कर पटा पहारं । धरब हार चढ्ढिय षग धारं ॥
छं० ॥ १३६५ ॥

झुझे कंठ कंठ एकेकं । करै घाव लग्गि का छल केकं ॥
अंत अंत रुझझै सम सूरं । मानौं कचर सुंड करूरं ॥
छं० ॥ १३६६ ॥

केस उकस्से तुट्टे आवध । धर ऊपर भर करे महाजुध ॥
श्रोन प्रवाह पलक्के पालं । फुरके फेफर तुट्टै बालं ॥
छं० ॥ १३६७ ॥

घरिय पंच जुड्ढह परचारं । हिंदु मेछ घन परे पथारं ॥
साठिं षांन दस राय रवद्दं । परि धरनी क्रित करे रवद्दं ॥
छं० ॥ १३६८ ॥

आर्या ॥ यह रावर बर बीरं । सद्दिय षान ढान भर धीरं ॥
भं भज्जे गये सुरेहं । रोहत रवि बिंब राय चुम्मानं ॥
छं० ॥ १३६९ ॥

दूहा ॥ भगी सेन सुरतान रन । गए पास बन षान ॥
देषि अप्प दोरयौ बिहसि । सज्जि सीस असमान ॥
छं० ॥ १३७० ॥

शाही सेना में से शाह के भांजे खानखाना का अग्रसर होना और उसका पराक्रम वर्णन।

भुजंगी ॥ तब तज्जयौ षान षानौ करूरं । सुरत्तान भानेज जुद्धं जरूरं ॥
सहस्संच पंचं बरं बंधि फौजं । बचें वाच दीनं सुदीनं सरोजं ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

हहक्कारि गज्जे सुमीरं गुहीरं । करै सब्ब मानं सुरक्की कठीरं ॥
सनमुष्ष रा स्वामि चिच्चंगं कोटं । सहस्सं चिबीरं बरं बंधि ओटं ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मिल्लै धाय दून उभै हिंदु मीरं । वकं उंच बाकं झुटं जुद्ध धीरं ॥
दुवं डारि ओड़न गज्जे गहीरं । घनं घाय अघघाय तुट्टे सरीरं ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

फरक्कंत फेफं सुभंतं अलुभ्झं । चलै श्रोन धारं षलक्कीन झुझ्झं ॥
परै अंग अंगं सुभट्टं सुरेसं । कटै गात गौरं अधं ब्राह्म नेसं ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

हहक्कंत हक्कंत धारं करूरं । उभै हथ्थ बथ्थं मिले सूर सूरं ॥
मचै बीर आंवत्त तारीं चिघायं । उकस्संत कस्से छुलिक्का छुरायं ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

मिल्लै दिट्ठ षानं षुमानं सजूरं । चलै सम्मरी मंग हक्के करूरं ॥
चढे जून दूनं भरं बीर रूपं । मिलै बोल बोलं सुभै सब्ब जूपं ॥
छं० ॥ १३७६ ॥

हयौ षान षुम्मानं संगी सजूरं । चलै षंग सीसं हयं षग्ग सूरं ॥
समंजीन फुट्टी हयं जीन जामं । धनं धन्य जंपंत आयास तामं ॥
छं० ॥ १३७७ ॥

फिरे आय पुट्ठे सुषानं जमानं । हयं षग्ग लग्गं कटिं तुट्टि थानं ॥
धरै धार हमेल लीनौ समुष्षं । हयौ ताम कट्टार नासुष्षं कष्षं ॥
छं० ॥ १३७८ ॥

चलौं जोति षानं षुमानं अयासं । सम तेज तेजं समं सूर नासं ॥

परे सहस्स चय मीर हिंदू सहस्स । कटे मंडलं द्रुन भर रूक रस्सं ॥
छं० ॥ १३७९ ॥

खानखाना के सिवाय अन्य १४ मीरों को मार कर समर सिंह जी का स्वर्गवासी होना।

दूहा ॥ मचि आहत्त सुजुद्ध बर । तुटि छुट्टि सब सस्च ॥
अनो अन्न सममंस सुनि । किरच किरच बहु अस्च ॥
छं० ॥ १३८० ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ सिर सीस । छंद छलनी क्रित आसह ॥
इह अमुष्ष नन भाष्य । हयं कूदति आरासह ॥
नन आई आचरन । आन अच्छरी उछंगह ॥
सिर धरन्त तुटि तन्न । तान जोगिय भग्गा मह ॥
असवार सनाहति अस्सु बर । धार पार होइ उत्तरिय ॥
षिचंग राइ रावर समर । बिहुन अस्त सममिझि न परिय ॥
छं० ॥ १३८१ ॥

जब दल्ल षान ततार । मार मथ्थे परिहारं ॥
समर सिंघ अवलोकि । हयौ झाडन कतिवारं ॥
चपल हथ्थ बरमथ्थ । सीस तुट्यौ रडवंडह ॥
रुड मुंड हुअ षंड । सुंड कट्टी दती बंडह ॥
परि टोप अग्ग बगतर जिरह । धां अपुट्ठ मेरें[१] भरां ॥
ढहि गजराज साज झलप्पट भयौ । समर सिंघ पावक करां ॥
छं० ॥ १३८२ ॥

बर दिट्ठ मुट्ठि षंधार । षान नवरोज रिसानिय ॥
भिस्ति छंडि दोजिग परंत । तुच्छ अग्गौं हिंदूवानिय ॥
दे भग्गिन मारूफ़ । गुलब गाजी सुनि संमन ॥
षया काफर फरजंद[२] । फते पीरोज षां कंमन ॥
रे चमरेज गुंजार षां । पढ़ि कलमा मुष करिकहौं ॥
सुरतांन षान चहुआन सम[३] । सब हिंदू एकत ग्रहौं ॥
छं० ॥ १३८३ ॥

(१) ए. कृ–को. फेरे। (२) ए. कृ. को. फरंदं। (३) ए. कृ० को०-सौं।

दूहा ॥ समर सिंघ केते कते । जह तह कहु मार ॥
गनै कोन हयगय भरे । धरे षान दस च्यार ॥ छं० ॥ १३८४ ॥

कवित्त ॥ *परे षांन नवरोज । टूक टूकह तन तच्छिय ॥
जो भग्गिन मारूफ । सार सुभिमथ मुष अच्छिय ॥
परे षान गुल्लाब । समन नेचम मम रेजह ॥
गुंजार षान बाजो । समर सिंघ से हथ्थ ढहि ॥
पीरोज षान मीयां मरद । वे ओडन घल्ल सु बथ्थ ॥
चिचंग राव चावद्दिसा । चवै ईस अच्छरि सु कथ ॥
छं० ॥१३८५॥

दूहा ॥ सिरदारह दस च्यार गिरि । समर सिंघ घन घाइ ॥
ह विहानै उत्तरि परे । चहु यौल मंगाय ॥ छं० ॥ १३८६ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि प्रान पुरसान । गुर वर अंमथ्थ उपदियं ॥
समर सिंघ मुष चहर । हिंदु मेछन मिलि जुट्टिय ॥
गिद्धिन पल संग्रहनै । जुध्ध लंबे रन आइय ॥
ओन परंत निझरत । पच जुग्गिनि लै धाइय ॥
पल चरिय मेछ हिंदू सहर । अच्छरि मत्त अति जग्ग किय ॥
महदेव सीस बंधे गरां । काल झरपि लीनौ नुज्जिय ॥
छं० ॥ १३८७ ॥

प्रिथा कंत परदीप । लज्ज संकर गर बंधिय ॥
जिय बासुर दोइ च्यार । बहुरि कलिजुग्ग सुपछिय ॥
सोई लज्जां के काज । रज्ज मुक्कै रघुराइय ॥
रैंवन लंक विनास । लज्ज बंध्यो सरिताइय ॥
लज्जां सु कुंअ नग देवन्नप । सीस कट्ठि हथ्थां धरै ॥
इह कवित्त एक लष सरिस । लरनहार लज्जां भिरे ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

मोतीदाम ॥ परयौ धर रावर सावर धाइ । घयंघग घेग तनं मिछताइ ॥

* इस छन्द के चतुर्थ चरण से मालुम होता है कि बीच में कोई एक आध कवित्त छूट गया है केवल उसके पंचम या षष्ट चरन की यह एक पंक्ति शेष रह गई है।

(१) मो०-लीयौ।

घटक्कं घाइ निघाय अघाइ। कटे कट युत्तर उत्तर नाइ॥
छं० ॥ १३८९ ॥

उड्यौ दल षां षुरसान अपार। मनो दधि गंग मिलान प्रचार॥
अगे गजबाज चिकार हंधार। मंडी धर बाघुरं घोर निकार॥
छं० ॥ १३९०॥

फरक्कत नेजनि नृत उतंग। मनौ रति राज विराजत दंग॥
धरे गज रत्त द्रवै गिरि घत्त। परै गन मोतिय आरति तत्त॥
छं० ॥ १३९१ ॥

चमू चतुरंग चवै चवसट्ठि। बजावत ताल विताल अनट्ठि॥
परे मह भीर महाभर भार। बजै षग कुंतनि तुट्टनि तार॥
छं० ॥ १३९२ ॥

तीरथ्थर लुथ्थि अलुथ्थि पलथ्थि। भरफ्फर गिद्ध तरफ्फर तथ्थि॥
उड़ै घन छिंछ लगै असमान। उठै जनु होरि फुलिंग प्रमान॥
छं० ॥ १३९३ ॥

लगे वर सावध आवध वथ्थ। नचै धर धीर बिना धर मथ्थ॥
जयज्जंय सद्द सुबद्दहि एत। पर्यौ कटि रापर राइ सु षेत॥
छं० ॥ १३९४॥

मिल्यौ प्रथिराज विराजत[1] रेन। पर्यौ गज सिंघ अबी हन सेन।
कर्यौ पयपान धरी गज भाल। कढ़ै रथ कालिय नथ्थ गुपाल॥
छं० ॥ १३९५ ॥

ढरै धर गज्ज वहै रत भार। निसातम भै चँप छुट्टि अपार॥
हुए सम षालहि एहक सेर। उरप्पर ऊरध अद्ध विरेर॥
छं० ॥ १३९६ ॥

मनौं द्रुम राज लगे दोउ वीर। निकस्सय एमझ्झ पारनि सीर॥
भरे अगतून तनं तन राज। लगे अहि धाथ मनौं तर राज॥
छं० ॥ १३९७ ॥

लगी मुष संगिवि षान षँधार। बजावति मागध भेरि भँकार॥
तरे कर कुंत गहै कर षग्ग। महष्षह सेन वियं गज मग्ग॥
छं० ॥ १३९८ ॥

(१) ए० कृ० को०-विराज विरेन।

परी गज कुंभनि कुंभनि तारं । घयऽघन बीज छुटी अतिभार ॥
इते परि सीस पुंतार समेत । उते परि नोग निंदूक समेत ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

भए चव कोदनि मीरनि मीर । लगे. प्रवि ते घट बीरनि बीर ॥
लग्यौ न्रप रस्स भरभ्भर षग्ग । जगो. जनु बीज घनं घन बग्ग ॥
छं० ॥ १४०० ॥

चलै रत बान चलै घन बुंद । गनं रज्ज निद्धि अजुं मिटिं दुंद ॥
गिरे दह दाह मसंद सु घाय । गिनै कुन नाम तिनें अतताइ ॥
छं० ॥ १४०१ ॥

पटा झट कुंतनि बाननि मात । परे गज कुंभतिं कुच्छ प्रमान ॥
परे कटि पट्टनि षंडनि षंड । फरस्स फिरंत्त तरफ्फर तुंड ॥
छं० ॥ १४०२ ॥

विथारिय दूरितिं स्रोन अपार । मनों नषि धीमर जार खफार ॥
गहैं इत उत्त सु गिद्धनि गिद्ध । मरालिय अंचि सिवाल अंतिद्ध ॥
छं० ॥ १४०३ ॥

विचें सिरं रूह तिरें सिर सार । तिरें मनु वारि बतक्कनि लार ॥
करै चवसट्ठिनि मंगल चार । नचै नव नारद जुद्ध विहार ॥
छं० ॥ १४०४ ॥

कढे जुंगं तोन दहं नवलूर । दुहे चवकट्ठि सबें बर मूर ॥
....छं० ॥ १४०५ ॥

दूहा ॥ के सांई भर उप्परह । के भर उप्पर सांइ ॥
कटि मंडल हिंदू तुरक । हय गय घाय अघाइ ॥ १४०६ ॥

बाईं अनी का युद्ध समाप्त हुआ जिसमें दस राजपूत सरदार और ६० यवन सरदार मारे गए।

संवर सिंघ रह ते रहि । साठि षान दसराइ ॥
परंत महंन परिहार रन । मेछति सहस सवाइ ॥ छं० ॥ १४०७ ॥

भुजंगी ॥ परे साठि षानं दसं देह रायं । ढहे ढाल नेजानि नीसाने ठायं ॥
छुटैं मंत मैमंत दीसै दिसानं । चढी पंति पंषी परे पीलवानं ॥
छं० ॥ १४०८ ॥

उत्तोलंम आलंम छची छितानं । जुटे जोट जुट्टे भए भै भयानं ॥
रुप्यो रंघरी राव बाराह षेतं । रह्यौ रोह आसुव षानं सु जैतं ॥
छं० ॥ १४०९ ॥

भरे बान सन्नाह सुभ्भं सु देही । वियौ चष्प लष्पे अषे जानि सेही ॥
गहै षग्ग धावै सु बाहै पचारै । लगै घाइ पुंडीर साईं सभारै ॥
छं० ॥ १४१० ॥

नियं भ्रंम रष्षै सदाव्रत गेही । इहड्डुह षेलंत बालक्क जेही ॥
परी का भषै का जरै का हुतासं । असुतीन तेंकै घरं की अयासं ॥
छं० ॥ १४११ ॥

कियं जुट्टि हड्डं रनं रत्त रत्तौ । लही मुत्ति छत्तीन सुछिम्म गत्ती ॥
फटे सेन दूनं भरं गो उभारं । दिषें थान थानं जिसे प्रात तारं ॥
छं० ॥ १४१२ ॥

म्लेच्छ सेना द्वारा पृथ्वीराज के घेर जाने का वर्णन ।

दूहा ॥ वाम अनी कंदल भयौ । सो जान्यौ ढिल्लिराज ॥
सित संदेह समुच्चरयौ । अबरन रुंध्यौ राज ॥
छं० ॥ १४१३ ॥

भुजंगी ॥ चंपी सेन दूनं चहुआन गोरी । वले घाइ आवत्त असुरत्त जोरी ॥
उवं घाइ छिंछं सु सोहै प्रकारं । मनो बीर राय बसंतं सवारं ॥
छं० ॥ १४१४ ॥

तुटे मंस अंसं चलं स्रूर स्रूरं । तिनं देषियं भंति कंती करूरं ॥
वजे घाइ भाईं मिटे जो निसानं । उडै गिद्धसिद्धी सु गावै न जानं ॥
छं० ॥ १४१५ ॥

उडै बीर बत्ती सु भारथ्थ जित्ती । मिसे मत्त मंतं लगे लोह तत्ती ॥
... . छं० ॥ १४१६ ॥

रसावला ॥ इत्त अैसें भरी, सेन भग्गा परी ।
सोहि जा ढब्बरी, चोहु पष्पा फिरी ॥ छं० ॥ १४१७ ॥
राइ जा संभरी, लोह, लोहड्डरी ।
ढिल्लि रा जंभिरी, उट्ठियं अम्मरी ॥ छं० ॥ १४१८ ॥

(१) ए० कृ० को०—अष्षैं ।

नैन रत्त भरी, षोलियं पंजरी।
एक एकंतरी, जानि विज्जं झरी॥ छं० ॥ १४१९ ॥
अद्ध अद्धं धरी, भूमि लुट्टं करी।
वारि तुच्छं घरी, नेज चोरों सुरी॥ छं० ॥ १४२० ॥
श्रोनं रंगं तरी, देव देवं हरी।
बरन अच्छी वरी, मुगति पोली दरी। छं० ॥ १४२१ ॥
दौन दोउंटरी, सामंतं षै परी। छं० ॥ १४२२ ॥

पृथ्वीराज को अपने को घिरा हुआ जान कर गुरुराम को कुंडल दान करना।

कवित्त ॥ या रष्ष्यै गुर राज। राज विग्रह सुष चायौ॥
पंच इंत कुंडलिय। लहू द्रब्ब कोरि सवायौ॥
जा जोगिनिपुर देव। राज राषहु चहुआनिय॥
मों काया बंध भग्ग। संग लै हुं सुरतानीय॥
दुज हस्त मंडि लेंछो तुरयो। 'भोरु' जुद्ध विहद्द दिन॥
छिन भंगं देह बिज्जल छटा। दुष्प न करहिं महंत जन॥
छं० ॥ १४२३ ॥

गुरुराम का कुंडल लेकर चलना और मुसलमान सेना का उसे घेर लेना।

पानि मंडि लिय दान। सुत्ति भनि वेद मंच दिय॥
मंच जाप जालंधर। राज अंगह अभंग किय॥
सार धार निघघात। भेद छेदन राज वप॥
सिलहदार सारंग। सध्य किय इन्द्र देव जप॥
वज्जंत पुट्ठ गाजीय सकति। घरि घंट गोरीय सुघर॥
सुनि हकं भक्क हैगय मुरिय। सहस पंच उत्तरिय भर॥
छं० ॥ १४२४ ॥
सहस पंच उत्तरिय। षान षुरसान सपतौ॥
पहुपंचलै पतिसाह। आय सुरतान मिलंतो॥

(१) ए० कु० को०-मोहु अब विवुद्ध दिन। (२) मो०-राय।

तीन ख्रान मज्जून। मारि अंकुस गज फेरिय ॥
चक्रवान चतुरंग। बंधि चावहिसि घेरिय ॥
अरि सिलहदार सारंग दे। गहअ षान गोरी गसिय ॥
उर उरनि उरजि अच्छरि अछिलि। उर बंसी हिरदै वसिय ॥
छं० ॥ १४२५ ॥

कुंडलिया ॥ दिव कुंडल प्रसवस्ति षसि। फिरि दष्षिन गुर राम ॥
मरन जानि इच्छौ मरन। स्वामि सु भुल्ल्यौ काज ॥
स्वामि सु भुल्ल्यौ काज। सु दल धायौ दल म्रोनह ॥
वहै न सस्त्र समथ्थ। उभै बड गुज्जर द्रोनह ॥
उर चंप्यौ कट्टार। मेछ हथ्थह रन मंडलि ॥
विप्र जाति न्रप हेत। अषिथ सर्वस्तिय दिय कुंडलि ॥
छं० ॥ १४२६ ॥

बहवल खां का गुरुराम का सिर उड़ा देना, गुरुराम का पड़ते पड़ते शाह के भांजे को मार गिराना।

कवित्त ॥ गुर ढिग कुंडलि देषि। पेषि बहवल्ल षान धंपि ॥
द्रौपद सुत जिमि तेग। बेग भारी भंनंग झंपि ॥
राम सीस लिय ईस। कमल बिन पंजरु कढ्यौ ॥
हथ्थ छंदि उर षान। पीठि पच्छं दल बढ्यौ ॥
बाभन हथ्थ अचरिज सुनहु। अरि कटि तें असिवर लियौ ॥
भानेज साहि साहाबदी। हय समेत चष षंड कियौ ॥
छं० ॥ १४२७ ॥

दूहा ॥ द्वै बंधव भानेज द्वै। द्वै दुष कीनौ साहि ॥
दुत कौ दुज प्रथिराज भय। गुरु बिन बंदो काहि ॥
छं० ॥ १४२८ ॥

गुरुराम की मृत्यु पर पृथ्वीराज का पश्चात्ताप करना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। बाज तजिहौं पनि भुक्खौं ॥

(१) ए० कृ० को०—कनंक।

मुओ राम गुरु राज। मंत कासौं मिलि बुझझौ॥
आज मुवौ सोमेस। आज कैमास हि झुझयौ॥
आज कन्ह गोयंद। ख्वर सामंत न सुझझयौ॥
इह जान दयौ कुंडल कानं। हम जान्यौ गुर जाय घर॥
कूरंभ कहै चहुआन सुनि। दुष्ष न करहि महंत नर॥
छं० ॥ १४२९ ॥

दूहा ॥ हम अब दुष्ष न सुष्ष मन। नह दिल्लिय धन धाय॥
मोरें मेछ मसंद भुरि। इह लग्गी मन चाय।
छं० ॥ १४३० ॥

पृथ्वीराज को म्लेच्छ सेना का घेर लेना।

भुजंगी॥ मिले चारु चहुआन सुलिहांन गोरी। महा रूंम जंग रही जानि जोरी॥
तिनंकौ उपम्मा कविचंद घट्टे। उभै कूट पीसं सटं इष्ट भट्टं॥
छं० ॥ १४३१ ॥

तिनं मझ्झ पैग्गं सुवंको चमक्के। कियं भेस चंदं बलं बान इक्कै॥
धवै गिद्ध सिद्धी दुअं चेम षग्गा। धन रत्त धारं बरषन्न लग्गा॥
छं० ॥ १४३२ ॥

निसानं क धायं अवाजं फुरक्कै। मुद्दै सद्द तिन्नं बजे धार बक्कै॥
चखी लालची जोगिनी पंच छंडे। पुटै रुद्र रुद्री सुरत्तीव कट्ठे॥
छं० ॥ १४३३ ॥

तुटै सीस भारी द्रयौ द्रोन नंचै। मनौं बीर नट्टं सयं भंग रच्चै॥
घिग्यौ षान तत्तार चंपै सयन्नं। दिषे साहि गोरी झकं बीर तन्नं॥
छं० ॥ १४३४ ॥

कबित्त ॥ सकल सूर सामंत। परी पावस चहुआनं॥
षेत हथ्थ चढ्यौ। तारि कढ्यौ सुरतानं॥
षां ततार मारूफ। हक्कि चतुरंग चलाइय॥
विंभम लोह मच्यौ ठयौ। बीर बर नंचि चधाइय॥
तुटि बंध कमंध नचे छिवर। धार धार धर उतरयौ॥

पत्त सु सगर सौभाग हर । अमु ध्रुव मंडल चित्तर्‌यौ ॥
छं० ॥ १४३५ ॥

गुरुराम के दिए हुए कवच के प्रताप से राजा की रक्षा होना ।

वह आरिय गुर राज । मंच सन्नाह कवच दिय ॥
नष रष्या नर सिंघ । चरन चष भुज रक्ष किय ॥
पग पिंडी जग पिंड । वसे वैकुंठ जंघ वर ॥
रोम रुवनि कटि रष्षि । गुह्य गोविंद गदाधर ॥
थल उरद्दह पावर परजयौ । भुज वामन कंठह हरी ॥
मुष रसन कान द्रिग केस वर । काल बंध इत्ती करी ॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ अंग अगम सुगम करि । पग अमग्ग बहुआन ॥
दिसि दच्छिन प्रथिराज पर । उत्तरि सेन सुविहान ॥
छं० ॥ १४३७ ॥

कवित्त ॥ प्रथु आवध छुट्टिइ न । गुरज बज्जिय गुज्जर पर ॥
जनु पषान पर बुंद । रुंद लग्गिय दुज्जर धर ॥
टुट्टि टट्टर सिर स्रोन । छिंछ उड्डे भुमि बुट्टिय ॥
बर गिरद मन मंत । राइस आवधं लै उट्ठिय ॥
असुखेत आय दुक्कत घोरिय । लरियति जोय डरियति परिय ॥
पत सेन साहि गोरी गरुअ । तिरन तुंग तिमवर करिय ॥
छं० ॥ १४३८ ॥

रामराय वड़ गुज्जर और वीर पंचाइन का पराक्रम ।

वड़ गुज्जर रा राम । ढान ढुह्हि सुरतानह ॥
है गै नर विच्छियन । जानि खगराज खगानिह ॥
सबै सेनपति साहि । कंध कट्टिन झक झुकै
कुट्टिल दिट्ठ जह फिरै । सकल मिलि मित्तह रुकै ॥

(१) ए० —असुकव मंडल वित्तयौ ।
(२) ए० कृ० को०—आउ ।

उम्भरिय उहकि जोगिनि ह सै। जिम जिम धज बंबरि लसै ॥
एनु देव दच्छ गंध्रव्व नन। सकति हर किन्तिहि कसै ॥
छं० ॥ १४३९ ॥

दूहा ॥ मंत मंत के दंत पर। हन्नी संग वर ग्राम ॥
कट्टे कर उकठे नहीं। वत्त कहत भए ताम ॥
छं० ॥ १४४० ॥

कवित्त ॥ लष्ष लष्ष कहु गहिय। कठिन कै कुस कुस बानिय ॥
सुरिन मीर मारंत। सोज संसारह जानिय ॥
सुर नर गन गंध्रव्व। तिनहि लगि सत्त न छंड्यौ ॥
अंगदे जिम अंकुरयौ। भीम जिम भारथ मंड्यौ ॥
डडे बडरनि हिंदू तुरक। धरह लाज सो विस्तरन ॥
करि उर हनंत तुट्टिय कटकि। मुरी संगि कारन कवन ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

सुहिन दोस यह देह। सु मेरो बचन इक सुनि ॥
स्वामि काज संदेह। करत विसठार सबनि सन ॥
एक धरनि धरहरहि। एक गहि धरनि पछारै ॥
तीषे तरल तुषार। तिनहि तिनुका करि डारै ॥
न्त्रिमलिय संगि कुंजर डरह। तुम सु तेज अग्गर वहिय ॥
मन मुरिय राम रंजवि मनह[1]। रुहिर पीयत लुभिभ सुरहिय ॥
छं० ॥ १४४२ ॥

चोटक ॥ नंचि नंचि नुरे[2] जुथयं जुथयं। ततथे ततथे तह थान ग्रयं ॥
असिजं असिजं असि झंझलयं[3]। लुथि लुट्थिय उत्तथिय प्रलै पथयं ॥
छं० ॥ १४४३ ॥

गज बोजु फिरक्कि फिरै हथयं। गन गंध्रव अष्प कथै कथयं ॥
सुध भारथ प्रारथ जेम ययं। दिवि दिट्टिय सोन सुनी अथयं ॥
छं० ॥ १४४४ ॥

(१) ए० कृ० को०—रंजहि।
(२) ए० कृ० को०—नुरे।
(३) मो०—झझलियं।

उड मंडल लो उड़ता कथयं । ठग ठग्गियं नेन निसेन थयं ॥
छं० ॥ १४४५ ॥

मुकुदंडम्मर॥सक साल सुसाल सु चाल सुचाल इहक्कि जमाल हलं मिलयं॥
अगिवान रुबान बिवान रुभान किवान रुपान किसान जलं ॥
चर जा पढि संच सु सच्च समस्त रनोरन रत्तिन लुच्छं हैलं ॥
किल किंचिल बीर सुमीरहि भीर गए रन भीर अलोझ थलं ॥
छं० ॥ १४४६ ॥

किन नंकि तुरंग कुरंग कि श्राह धिश्राह सुविक्तिभ भार भरं ॥
घटि कायर सिंघ गए दिव बिह्व मरें इत हिंदुअ मेछ धरं॥
छं० ॥ १४४७ ॥
....

कवित्त॥ मुष निहारि छत्र धार । पर्यौ पंचो पंचानन ॥
गोरिय दल बल गह्यौ । चुंगल चप्यौ मेछानन ॥
एक सार उर धरिय । एक धारह उर धारिय ॥
एक मार सम्मार । एक कारह उर कारिय ॥
बर बरनि बिहसि दच्छिं जु कथै । रहसि रहसि पुच्छै जुरह ॥
घरि एक तरंगिनि रुक्कि जल । कमल जांगि नच्चै जु सर ॥
छं० ॥ १४४८ ॥

राज राव परसंग । देव बग्गरी बड़ गुज्जर ॥
षग्ग मग्ग अकलंक । सिंघ मंडै भुज पंजर ॥
राज गुरू दुज राम । कलिय ध्रंभन भय भंजन ॥
सिलहदार सारंग । सार सिंधुर भर गंजन ॥
छिति छत्र धार पंचाइनौ । सहस अष्ट प्रंडेस सर ॥
सिव सुनि सुदच्छ अस्तुति करै । साषि भरै सिघिन समर ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

एक गिद्धनी का संयोगिता के पास युद्ध का समाचार वर्णन करना ।

मन धारि दिय पच्छ । कंन लग्गवि कर सायौ ॥
पंग पुच्छि किय पच्छि । बंचि संदेस सुनायौ ॥
अमिय गयौ कल चंद । कमल मंडिय सुमान सर ॥

गति गयंद गत इंद । रूप रति रंभ सुरगहर ॥
उति[1] मान बिनय लच्छी सुहज । मौर पंछ केसो समन ॥
हाहंत तार इक्कयौ हियौ । उड्डै न हंस तुअ हंस बिन ॥
छं० ॥ १४५० ॥

संयोगिता का संकट में पड़कर सोच विचार करना और गिद्धनी का संक्षेप में बर्णन करना।

सोषे सर न्रप फुट्टि । हंस पंजर दुष बिद्धे ॥
दस जष्षां बरनेह । बीर मंजुर आलुद्धे ॥
प्रीति अंड उर हंस । हंस तिन हंस न उड्डै ॥
छिन पंजर परि भई । बाम कहि माया चड्डै ॥
झंकैव हंत चल्लै नहौ । चित्त पंथ उत्तर गही ॥
हंसनी हंस औं हंस को । हंस हंस करती रही ॥
छं० ॥ १४५१ ॥

रे पत्रधार परिहार । हंसनी हंस हंस किय ॥
हंस परा भव गत्त । उडे षग्ग नहि मुक्किय ॥
सोइ हंस हंस सों नेह । हंस बिन नेह न जोई ॥
मोह हंस सों बंध । हंस बिन मोह न होई ॥
आबुद्ध हंस हंसह सरस । मुक्यौ मोह छंड्यौ हियौ ॥
उड्डै न हंस न्रप हंस बर । ओल षुद्ध मुद्दह कियौ ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

पत्रधार परिहार । गुह्य गांमार वार तिहि ॥
सु ग्रह नारिउर धारि । कहै संदेस वार इहि ॥
निबर पेम संकरिय । सबर संकर गल लज्जिय ॥
छुल यल कल लुट्टै न । जानि जिम बाल सा लज्जिय ॥
तुअ काम नाम केहरि कमल । सार धार चड्डै बिमल ॥
पल चारिय जाइ जोगिनि पुरह । कहै कथ्थ गिद्धिनि सकल ॥
छं० ॥ १४५३ ॥

(१) मौ०—मन ।

कुंडलिया ॥ जनम जानि अंतर मिलन । जोगिनि पुरह अवास ॥
चरन लग्गि वंछ्यौ भरन । सह परि गहरु षवास ॥
सह परि गहरु षवास । जन मुहिय जानि जंजोरह ॥
काम धाम धम्मारि । मार छंडिय परिहारह ॥
छत्र धार सुरतान । मारि सिरषां सनमुष्षह ॥
करहि देव बंदना । षग्ग षावरस जनम कह ॥
छं० ॥ १४५४ ॥

दूहा ॥ इह कहंत कूरन बयन । उदै अनंदी बीर ॥
चाहुआन उप्पर परिग । दोउ कौन अरु मीर ॥
छं० ॥ १४५५ ॥

गिद्धिनी का संयोगिता के महल में राजा का चमर डालना और सखियों का उसे पहिचान कर दुखित होना तथा संयोगिता का गिद्धिनी से हाल पूछना ।

कवित्त ॥ चमर जंग नीसान । षान वर बार विछुट्टिय ॥
भुअ विहार आरोक । गोर जंबूरन छुट्टिय ॥
चीर हार षा चिग्ग । चौर ढारत कर भग्गिय ॥
धर अंषर संचरिय । चंद करि मावसि उग्गिय ॥
गहि चुंग घरी इक सुक्कमरिय । जोगिनी पुर जोगिनि विमल ॥
हिंडोल हेम संजोगि ग्रह[1] चमर डारि गिद्धनि समल ॥
छं० ॥ १४५६ ॥

कुंडलिया ॥ हाइ तन कीनौ सषिन । दिषि गिद्धिनि हिंडोल ॥
चमर दृष्षि चिंतनु कियौ । नग मोती अंमोल ॥
नग मोती अंमोल । सोहि तरुनी उर चंप्पौ ॥
इह सांई संदेस । समल गिद्धिन मुष जंप्पौ ॥
उदिक अघ आरम्भ । कह्यौ भारथ कथ कंतह ॥
भ्रमर झंपि उर तरनि । सास कट्ठुन हा हंतह ॥
छं० ॥ १४५७ ॥

(१) ए० कृ० को०—भुँइ ।

गिद्धनी का आरंभ से युद्ध का वर्णन करना ।

चोटक ॥ पति वृत्त सुनंत सँजोगि सली । समली अरु गिद्धनि उड्ड लती ॥
उड कालिंद्र कुह्ह दिन कंद्ढ लभौ । घटि एक घटं महि रष्पिन ज्यौ ॥
छं० ॥ १४५८ ॥

प्रथमं ग्रंथ कंत कथंत कथं । फुनि राज बधू नव राज सथं ॥
दिसि वाम उठी षुरसान अनी । तिनकौ मुष रावर सिंघ रनी ॥
छं० ॥ १४५९ ॥

कर सिंगि जुनाग मुषी विगसी । पहिलें रिस रुस्तम षां नगसी ॥
न सही प्रभु जंबुक की अरकैं । धक दी धक धौंग परयौ धरकैं ॥
छं० ॥ १४६० ॥

गिरयौ षग षान षुरेस गिलयौ । दस पेंड दिवांन ततार ठिलयौ ॥
विझि षेत रह्यौ षग षानि जिहां । ले आन जुनीन महान तहां ॥
छं० ॥ १४६१ ॥

षग सेल हुलै हमला हल कें । गिरि मानहु मेरु भुजा बल कें ॥
उर पार फुटें हुलसें निकसे । जनो पन्नग बेलिकि के विगसे ॥
छं० ॥ १४६२ ॥

जिन रावर राह पुंडीर बह्यौ । तिन बार नगाडव कौने रह्यौ ॥
मनु पंच हजार तिल थ्थि मिले । दस तीन कमंध उठंत बिले ॥
छं० ॥ १४६३ ॥

सिर हक्कि सियाल सुगिद्धन सी । इति कथ्थ कही समषी रसी ॥
फुनि गिद्धनी ध्यान कहै रहसी । जिम हिंदुव मेछ भए बिहसी ॥
छं० ॥ १४६४ ॥

दूहा ॥ ते सब मिलि वर जंपि कथ । रावर राज नरिंद ॥
सो विंक्रि भारथ्थ मे । सो कहि दुष्प अनंद ॥
छं० ॥ १४६५ ॥

हे चिलही भारथ्थ कथ । जंपि सुगिद्धनि सुद्ध ॥
सुनिय श्रवन भारथ्थ ग्रंथ । उड्ड हंस बर सुद्ध ॥
छं० ॥ १४६६ ॥

कवित्त ॥ पियत कंत सुनि बत्त । जुद्द सामंत समर की ॥
वर मनुष्य जानैं न । जान दानव चंमर को ॥
सिर तुट्टै धरि रुक्क । द्रोन नच्चि असि वर भारिय ॥
सबैं सेन सुलतान । ग्राम अस्तुति उच्चारिय ॥
सिर तुट्टि कमंधज मट्टि दल । सो ओपमं वरदाय वरं ॥
वर अपत झिमी गज्जे बरह । धरजोरी जुभ्भार वरं ॥
छं० ॥ १४६७ ॥

दूहो ॥ दयबंध दूष बरन बिय । तीस ईस को दीय ॥
तन छारा धर उत्तरिय । पुलचर भूषन कीय ॥ छं० ॥ १४६८ ॥
कहि गिद्धन समवी सुबहि । ज्यों बित्यौ भारथ्थ ॥
समर वीर सथ्थह परी । धुकहिन सुभर भए कथ्थ ॥
छं० ॥ १४६९ ॥

कवित्त ॥ पर्यौ सुभर धावास । सेन सुरतान ढंढोरिय ॥
परि सुगौर नाहर नरिंद । रेह रष्षिय अजमेरिय ॥
पर्यौ बंध सुरकिव्व । बंध हक्किग कबंध बनि ॥
परि भुआल गुज्जर सुवीर । सार सुरतान भज्जि मन ॥
रावर नरिंद सत सद्ध परि । परि भग्गा भग्गा न कज ॥
तातारषान षुरसानपति । मुष चढ्ढे आहुट्ठ रज ॥
छं० ॥ १४७० ॥

त्राटक ॥ आचिज्जो आचिज्ज राजन रन भूपाल भूपालयं ॥
भारा कोत निवर्तयंत धरनी त्रिघातयं घातयं ॥
धारा धाक सु सुक्क धक्क धरनी वरं सुरत्तानयं ॥
गोरी सेन चिवार तुंग तरुनी तारायं तारायनं ॥
छं० ॥ १४७१ ॥

दंती दंत उमत्त मत्त उमडी कूहाई कूहाइनं ॥
ढाल ढाल उढाल भाल उलल भ्भाइउनं ॥
घायं घाय सु हंस हंस तुअगी जूते जटो जूटनं ॥
लूटा लूटि सुषग्ग षग्ग षचरं षड़ामि षायानन[२] ॥
छं० ॥ १४७२ ॥

(१) ए० कृ० को०—सत । (२) ए० कृ०—सायइनं, को०-षायइमं ।

अंती अंत सु अंत रोइ उडगं सुगाय सुचूपट ॥
रंभी रंभ सुरंभयाइ बरणी बंभाइ रंमाइनं ॥
षामं डाय प्रचंड झेत छितयं भेडं समुद्रं मही ॥
भेजं भेज सुनेत भेत किरयं लम्भाय[१]सुत्ती सही ॥ छं० ॥१४७३॥
नव खुरा षड गुज्जराइ सिरयं श्रोन छिता श्रोनयं ॥
सारूरं घरं डंकि गोरिय धरं धर नाभिलं गिद्धरं ॥
ताकं लखंतं बकंत कुडंजि भिमं वाला छिता बागरं ॥
सा बानं मुनि मिच्छ इच्छ डवनं आोराभितं अंमरं ॥
छं० ॥ १४७४ ॥
तबं भीमच्छ पुंडीर पावसरसं लिघा दिनं रावरं ॥
षां षाना पुम्मात जौति उभयं इ छानि इंदं उरं ॥
बाहु ते क्रूरंभ बग्ग षलुषं जामानि जहीं दल ॥
है है कंति क्रहंति हुंति उरवी न्नकंति नायं पुरं ॥छं०॥१४७५॥
सा सुनयं चहुआन सीस धुनयं भूमी विहराइनं ॥
चोरं द्वार सुचोल पालि उडयं सकंतथं उप्पारयं ॥
सा सकं तिंग रखंतं साह पुलयं होसंत देवं पुरं ॥
जंगी जंग विछुट्टि छुट्टि भरयं चंदाय आयासनं ॥
छं० ॥ १४७६ ॥
चामर चुंगल चंपि चसध्रमिस एक घटी जुड्यं ॥
सा जुडं प्रथिराज राजन इकं भेखानि से सत्तयं ॥
रीं सुष्षं पुरसान षान भरियं हिंदवान हिंदू हयं ॥
बाहं साहि संहाव गोरिय धरं मम्मान भूनष्षायं ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

अरबखां उज्जबक का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कबित्त ॥ सारे श्रीक्षम का गुमान। आरब उजबक्किय ॥
षांसवान सुरतान। सार लग्गे नह छक्किय ॥
देइ भारा कम्मान! तीन सायक तेरह से ॥

(१) ए० समाइन। (२) मो०-सामूरं। (३) ए० कृ० को०-दहं।

अट्ठारह लोहक। कंध कढ्ढै सुर हंसै ॥
बेहथ्थ कराई हथ्थ कों। बथ्थ राज घत्तन कहै ॥
मुजनंक मुसाइत[1] छंडि हय। तकि तकि सु मुह रहै ॥
छं०॥ १४७८ ॥

वह तकै प्रथिराज। राज कै उछितोरन ॥
दिट्ठ दिट्ठ कक्कर। मिले मरदां मुष जोरन ॥
बांई उप्प बाई। चाप चुंगल उचछट्टिय ॥
सारंगी सारंग। भीम वनमद्धि उपट्टिय ॥
बहुअरल कमान करप्पि करि। अग्गिवान ठट्टर बहिय ॥
लगि षान पुषान किसानं उड़ि। बहर नक्कि भल्ली रहिय ॥
छं० ॥ १४७९ ॥

पृथ्वीराज की बानावली से यवन सेना का छिन्नभिन्न होना ।

बीय बान सिंदूक। मद्धि सुरतान जान बहि ॥
बहबल षां ढिल्लरिय। सीस सिप्पर समेत ढहि ॥
तीय बान ताकंत। श्रोहि करि आलम षोहय ॥
वेद बान षुरसान। षान मुष मद्धि समोइय ॥
पंचमौ धरत धरनिक धरकि। भरकि पुट्टि गोरिय सुभर ॥
अस उंचवाह अस्तुति करै। धूंब धूंब हिंदु सुहर ॥
छं० ॥ १४८० ॥

मोतीदाम ॥ भरै गुन पंच उभे इक तोन। रह्यो प्रथिराज गुरू जिम द्रोन ॥
तुरंगिय जुत्थ पंमय श्रोन। तमो तमके मति घट्टित जीन ॥
छं० ॥ १४८१ ॥

समो सम जुद्ध बिरुद्धनि भोन। क्रमे पहु पंजुलि भ्रमर गेन ॥
क्रमो क्रमि अच्छरि कच्छरि ढोन। बदै बर गिद्धनि संभर दोन ॥
छं० ॥ १४८२ ॥

मुरी घुर गोरिय साहि सुदुट्ट। पराक्रम राज प्रथी पति रुट्ठ ॥
छं० ॥ १४८३ ॥

....

(१) ए० कृ० को०—मुजाइत ।

संयोगिता का कहना कि युद्ध का अंत कहू।

दूहा ॥ रन रुंध्यौ गिद्धनि कहै। सिद्धि संजोइय कंत ॥
समली स्याम सुलच्छनिय। अड़ जिय कहि न्रप अंत ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

अस्तु गिद्धनी का सारे युद्ध का वृत्तांत कहना।

हनूफाल ॥ कर करषि कोवंड बान। फटि थान अगिभर बान ॥
बजि पंष तेज प्रमान। लगि उपल उड्डत किसान ॥
छं० ॥ १४८५ ॥
जनु छोरि आरिय अग्गि। लग्गि सज्जर उडि गयमग्ग ॥
दुति तोमरं सिंदूक। छंडि कंक जोगिनि कूक ॥
छं० ॥ १४८६ ॥
सुरतान बसंत सनूर। वह बल्ल ढल्लरि चूर ॥
चिय बान तक्कि करष्षि। घन सेन सिंध भरष्षि ॥
छं० ॥ १४८७ ॥
वरबद्द वेदहि सष्षि। बढि छुट्टि अंचि षरष्षि ॥
षुरसान रद्दन सुर्षंडि। धर दसन इक्क सुमंडि ॥
छं० ॥ १४८८ ॥
धर धरनि पंचम बान। वहि पिट्ठिय सुरतान ॥
सुर असुर कौतिग कीन। दिन अद्धि अन्नहि सुभीन ॥
छं० ॥ १४८९ ॥
गज मत्त जिहि सर फुट्टि। पहु प्रान तजि धर लुट्टि ॥
लषि दीह अन सुरपत्ति। वर वरनि अंत सुगत्ति ॥
छं० ॥ १४९० ॥
कर मच्छ करि भर पांज। रनै विंटयौ प्रथिराज ॥
फिरि घेरियं न्रप मीर। जनु गिरन लागे बीर ॥
छं० ॥ १४९१ ॥
मिल प्रबल करि करि सेन। रन रेन छहित गेन ॥
गुंज कोध गोरिय साहि। गन सूर सनमुष चाहि ॥
छं० ॥ १४९२ ॥

पुरसान षां गज चूरि। सनमुष्ष आसन पूरि॥
जनु अनल अग्ग उतंग। चिहु पास विंटित गंग॥
छं० ॥ १४९३ ॥

भर मेच्छ कूट प्रकार। मंधि इंद मनो मुनारि॥
धरि कंध धनु न्रप वास। गहि कुलिस सुतं नित त्रास॥
छं० ॥ १४९४ ॥

दिव देव दैवै रूप। अरि वलनि बंद्धिय भूप॥
जल जलधि विथरित बद्धि। जनु मंदिरा गिर मद्धि॥
छं० ॥ १४९५ ॥

गह जमन भर सुरतान। प्रिथिराज बधन प्रमान॥
भरगेन सुर सुभ्र सूर। तिय लोक चरपति मूर॥
छं० ॥ १४९६ ॥

कविचंद दंद्दन देषि। दह दद्दयं रीस अलेषि॥
छं० ॥ १४९७ ॥

वीरभद्र का शिव से कहना कि सब सेना के मर जाने पर पृथ्वीराज ने एकाकी युद्ध किया।

दूहा॥ सगुण गवह सिव अग्र कथि। बीर भद्र सम वीर॥
रह्यौ एक संभरि धनी। लाज ओटलै धीर॥
छं० ॥ १४९८ ॥

साटक॥ कृप्पानं कृप्पान मांनय पनं दति वंस पासज्जर।
पुंषं कुंजर कूटि तूटि समयं पौरस्स आसिंहर॥
तद्दरं तेजं समान गं न हनयं धृद्वीर घत्त घनं।
सा अग्गं किरपान पत्त गहियं उंभारि वंकां दिनं॥
छं० ॥ १४९९ ॥

दूहा॥ हे हिंदिहनि गिलहन सुजग। धज सम धवल नरिंद॥
भौर न पल पंपिन परै। अलप जलप्पय निंद॥
छं० ॥ १५०० ॥

उड़ि पंषिनि अंषिनि निरषि। अषिज्ज अषंडल लागि॥

घरी एक पाछै प्रगटि। बीर बिभाई जागि॥

छं० ॥ १५०१ ॥

दूहा ॥ चय जु समर गिद्धिनि समक्ष। कहि षहपन्नि सहाय॥
षवधि कुंक बुद्धइ सुबुधि। आइय बहन बिभाइ॥

छं० ॥ १५०२ ॥

युद्ध की रात्रि को संयोगिता का एक डंकनी को स्वप्न में देखना।

कवित्त ॥ उवरु हथ्थ डंकिनिय। दसन एकय अधरानन॥
स्याम त्रिलक जुषषियन। कंत लंबे कंधानन॥
उरध केस सिर सुरंग। नेन पंग्गिय कुलु नंगिथे॥
प्रिय आलिंगन अलग। चमंर अंबर कटि ढंगिय॥
पुस्तक प्रसंग वंचय विहत। राज रवनि मंडहि श्रवन॥
बरवान त्रिब्रनौ पंचमौ। सुनि सुन्दरि जुद्धहि रवन॥

छं० ॥ १५०३ ॥

डंकनी का युद्ध का समाचार वर्णन करना।

भुजंगी ॥ उवं जुद्ध इह सुजं पै बिभाई। जहां सेन छंच पत्ती पातसाही॥
जहां सेत सेरं जु मौरं धिमाही। जहां बैरषं सेत ता गज्ज गाही॥

छं० ॥ १५०४॥

जहां सेत गज झंप गज मुत्ति भौरं। जहां पष्परी सेत मौजं हिसोरे॥
जहां सेतवासं सिला नेज झंडं। जहां सेत दंतीन सायइ मंडे॥

छं० ॥ १५०५ ॥

जहां सेत आरंभ पारंभ सेतं। जहां सेत ताजी सितां ग्रीव नेतं॥
जहां सेत उप्फारिका सेत लाजं। जहां सेत सारंगही फौज रांजं॥

छं० ॥ १५०६ ॥

जहां सेत सिंदू सिता लागि वाजी। जहां सेत ढाल सुआलम्म गाज्ज॥
तहां नंषि बाजी धरे लाज राजं। जुटे देषियै हरते स्वामि काजं॥

छं० ॥ १५०७ ॥

पद्धरी ॥ भौ हरत भार नृप सीर मार। परहरत पलक सरकार अमार॥

थरहरत मेछ मुग्गल हमीर । सरहरत सेस घर हरत धीर ॥
छं० १५०८ ॥

झरहरत एक धर परत तुट्टि । भरहरत रगत सिर गुरज फुट्टि ॥
छरहरत छुट्टि सत एक खेत । ढरहरत ढार ढरि लाग खेत ॥
छं० ॥ १५०९ ॥

तरपरत एक उप्पर चढंत । धरधरत कंध धर असि कढंत ॥
परहरत धीर धावंत रुंड । पारंत लोह वकि बेन मुंड ॥
छं० ॥ १५१० ॥

बरहरत बीर बर करन बार । भरहरत तुंग असिवर तुभार ॥
उड्डंत सार बुड्डंत मीर । रुडंत अंत जल रत्त नीर ॥
छं० ॥ १५११ ॥

फारंत फरद हडलंस तुट्टि । इम समर सूर तुअ नाथ जुट्टि ॥
छं० ॥ १५१२ ॥

पृथ्वीराज का अतुल पराक्रम वर्णन।

कबित्त ॥ वज्रपात निरघात । धरनि कै अंबर तुट्टिय ॥
दरिया दधि किय मथन । कड्डि गिरराज अहुट्टिय ॥
हनुअ द्रोन उप्पारि । आनि नंषिय किज कं तट ॥
गोरवधन गोकुल कि नाथ । छुट्यौ कि नीर घट ॥
दल धरकि सिरन सिप्पर लई । दैव कि किन उप्पर परै ॥
डंकिनिय कहै तुअ कंत इम । सू बिहान अस्तुति करै ॥
छं० ॥ १५१३ ॥

पद्धरी ॥ देषंत बान चहुआंन चारि । प्राक्रम तास लभं न पार ॥
कीनौं सजुद्ध आजुद्ध तेम । उपमान मनहि आवै न गेम ॥
छं० ॥ १५१४ ॥

मन भयौ विकल गोरी नरिंद । भग्गौ सुमीर भंषे रविंद ॥
असि कसे मीर महमुंद ताम । आएव साकि कीनौ सलाम ॥
छं० ॥ १५१५ ॥

(१) ए० कृ० को०—रकत।

उत्तंग अंग परचंड भूअ । भुज लहै कोरि एकेक जुअ ॥
हय उंच जाति एराक बंस । आरोहि तेन बाजी उधंस ॥
छं० ॥ १५१६ ॥

सम पूरि सिलह दोउ अंग आप । अदभूत तेज पग प्रचि नाप ॥
कम्मान काल सिर धारि ढाल । पेषंत सेन भज्जै पराल ॥
छं० ॥ १५१७ ॥

बोलयौ गाजि सम गज्जनेस । चहुआन षान कट्टन नरेस ॥
जंपयौ ताम गोरी सहाब । बिन हयं किंत्ति बढ्ढै सुआब ॥
छं० ॥ १५१८ ॥

हमं बेर बेर इन गहे मुक्कि । करतार ताइ कट्टै सुसुक्कि ॥
संग्रहौ तुम्म जंगल नरेस । हमं तेज तांप दैयौ असेस ॥
छं० ॥ १५१९ ॥

सुनि फिरयौ सज्जि महमुंद मीर । [१]बंधन सुपांनि चहुआन धीर ॥
सम आय पास हय तक्कि तार । प्रथिराज दिट्ठि दिट्ठी करार ॥
छं० ॥ १५२० ॥

महमूद खां का राजा के साम्हने आना और राजा का उसे मार गिराना ।

कवित्त ॥ निरषि राज प्रथिराज । दिट्ठ महमुंद करारिय ॥
मुट्ठि बान मंडयौ । तक्कि तांजी उप्फारिय ॥
बथ्थ तथ्थ चित्तिय समथ्थ । चहुआन मंनि मन ॥
धरिय भलक सिंगिनिय । सुलल विषझाल काल फन ॥
नंषयौ तांनि हिंदू बिहद । आवंतो सर मार मनि ॥
षंचिवि हयौ केवर कहर । तुट्टै मडि निरद्द उन ॥
छं० ॥ १५२१ ॥

घुंघ भौंग परि अग्र । उड्डि आयास बोनि पर ॥
लागि बान सपंष । मनो बिन हंस धरा ढरि ॥

(१) ए० कृ० को०-पार । (२) मो०—कहने ।
(३) ए० कृ० को०-बंधानि सुप्रनि चहुआन धीर ।

अग्रबानं लगि उरनि । भयौ महमुंद सुरेसं ॥
बड़ौ अंग बिहंग । मनौं बिल उरग प्रवेसं ॥
महमुंद विकल तन परि अवनिं । जानि कि नहुइ लाग सजि ॥
धन घंन्य सयल जंपिय संकल । विकल चित्त बिसम्म रजि ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

कुंडलिया ॥ जिहि बिध्यो सुरतान दल । सो रुंध्यौ रन रेष्षि ॥
गुरु गुरुतानी वज्जिया । बीर बिभाई भष्षि[1] ॥
बीर बिभाई भष्षि । सेन नंच्यौ पतिसाही ॥
गजकंधां आरोह । दिट्ठ दिट्ठै सिरताही ॥
राजबान उर्ज्जान । समर तक्क्यौ करि संध्यौ ॥
सो रुक्क्यौ रन राज । जनहीं पति साह सु बंध्यौ ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

महमूद के मरने पर ३१ मीर सरदारों का राजा पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ देष्यौ देव रस मद्दयत । रन उट्ठौ महुआन ॥
फिरि घेर्‌यौ गोरी सयन । तनो नछंच नभानं ॥
छं० ॥ १५२४ ॥

कबित ॥ चिहुटे बाण बिछुट्टि । दिट्ठि उंभिय मुठि भिन्निय ॥
कछु घन तारे घत्त । सगुन भंभारि बर धुन्निय ॥
कछु आवरदा सान । मास षट्ठा दिन उन्निय ॥
टोप सहित सिंदूक । छुट्टि भुम्मी रहि भन्निय ॥
अलि अलिय बंध लग्गिय कहर । धरधमंक मुच्छिय धरइ ।
एकतीस षान सुरतान सम । धरनि राज गह गहं भरइ ॥
छं० ॥ १५२५ ॥

लेहु बंध तुम हिन्दु[2] । राव बाराह करन भष[3] ॥
पैगंमर कै पास । बान हिंसान भरन लष ॥
हष्ष मंडि आरज्ज । लइ मांमा महि छिन्निय ॥

(१) ए० कृ० को०—लष्षि । (२) ए० छं० को०—हिन्दुनि तुम्ह ।
(३) ए०-नष ।

जै चंदा जल षाय । तेक तिस ऊपर किन्निय ॥[२]
को बार[१] हथ्थ दीया हिया । अब लभ्भै पच्छो किया ॥
इकतीस मसंद विसद्द फिरि । लेहु लेहु राजन जिया[३] ॥
छं० ॥ १५२६ ॥

मीर सरदारों का कहना कि कमान रखदो । राजा का न मान कर वाण चलाना पर चूक जाना ।

दूहा ॥ कहहि मलेछ मुह अग्गरे । बे काफर फरजंद ॥
बाह षान षुरसान की । सिंगिनि अप्पि नरिंद ॥
छं० ॥ १५२७ ॥

मन्यौं न बोल सम्मुह हयो । ग्रह षान षुरसान ॥
इह अपुब संजोगि सुनि । दिन पलट्यौ चहुआन ॥
छं० ॥१५२८ ॥

दिन पलट्यों पलट्यौ न मन । भुजं वाहै सब सच ॥
अरि भिंटन मिट्टै कवभ । लिष्यौ विधातह पच ॥
छं० ॥ १५२९ ॥

श्लोक ॥ विधाता लिषितं यस्य । तन्न मुंचंति मानवाः ॥
म्लेछानां बंधनं हस्तं । सुविहानं दिलेश्वरं ॥
छं० ॥ १५३० ॥

यच सुक्खं तच दुःखं । उभयोः प्रानवं ध्ययोः ॥
नहो सुक्खं नहो दुःखं । प्रानं जं विधयो लयो ॥
छं० ॥ १५३१ ॥

कुवित्त ॥ जो प्रगटै सुंदरिय । पै जीय पालन पिय चायौ ॥
यो पलटै प्रथिराज । सीस लग्गा गुन पायौ ॥
धां षुरस सुध षप्प । गोन क्रम षट्ट सहसपत ॥
परो सीस कम्मान । षान लग्गी सस सो गत ॥

(१) ए० – बांई । (२) ए० कृ० को०-दीना किया ।
(३) ए०-कृ० को०-लिया । (४) मो०-कहां सुष्वं तहां दुष्वं ।

भिरि भीर मीर पंतर सुगत । टरिय राज जिंय गोपरी ॥
जाने कि द्रोन बलिभद्र ने । सुत पर जद्दव सम्मरी ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

राजा का कटार निकालना और पकड़ा जाना ।

एक बान कम्मान [१] साहि चहुआन कोप गहि ।
षां ततार लइ बंधं । कढ्ढे सुरंग बहि ॥
छोड़न नंषि नरिंद । वार कट्टिय कंटारिय ॥
दिन पलट्यौ चहुआन । हथ्थ छुट्टै नह तारिय ॥
भावी भिगत्ति भजंन धइनं । दइ दुवाह इह न्त्रिम्मयौ ॥
पृथिराज गहन सुरतान कै [१] मुष जंपन बर सुभ्भयौ ॥
छं० ॥ १५३३ ॥

होतव्यता की प्रभूति वर्णन ।

मरति बार दुरजोध । पानि संग्रहि रोरह वर ॥
नल मुक्कै भट नट्ट । गोपि ग्राहत तन पंडर ॥
मलह सिंह कढि अदंग । गूजर राव अंगद ॥
हीर राह संग्रहन । दान छुट्टंत सो पुनि घन ॥
राजंस सूर संभरि धनी । अरि वसि परिमंजन सुगुर ॥
सामंत सूर सब्बैं परैं । रह्यौ एक रूपे [२] पहर ॥
छं० ॥ १५३४ ॥

पुं जापै जपहार । बलिय बंकट बध नौरी ॥
जोगिनपुरिय सनाह । देव देवर रन वीरों ॥
दहिया जंगल राइ । चन्द्र सेनापति तारं ॥
भारी भारथ राइ । अरक करिवर उच्छारं ॥
ठंठरिय टाक चाटा चपल । चावद्दिसि रष्षे न्त्रपहि ॥
देवतिय तुंग चहुआन प्रभु । विभ्भाइ भोयन जंपहि ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

इति दाहा सोभंति । राइ जाजा गज चढ्ढे ॥

---

(१) ए० कृ० को०—सुरतान गहन पृथिराज को।
(२) ए० कृ० को०—रूप्यौ ।

गज उप्पर ढहि परयौ। जानुं तुट्टिय जिय कट्टै।
कम्माला कालंक। बिरद बाँहाँ जिस ऊपर॥
पहुपी नंगी ढाल। सूर रुंडै जुग ग्रुप्पर॥
सुरतान काम सद्दै समर। राज सथ्थ जद्दौ बियन॥
अरिवान क ओलो बोलनो। बोलै डंकिनि याहि मन॥
छं०॥ १५३६॥

भूत होतष्यता का संकीर्तन।

लोहानो आजान बाह। पानी पति गड्डे॥
लहुआ लोलहु आइ। बीर वड्डौ ही वड्डे॥
पानी पत्त सुआन। धंन बसतूर बास दे॥
हय हथ्थी चय वास। आस उप्पर आसं ट्रे॥
अग्गाय स्वामि स्वानं गेहै। चामंडा वैरी भरन॥
बिभाई भीम भारथ्थ भिरन। हय हना अग्गे लरन॥
छं०॥ १५३७॥

दिन चवथ्थि चतरंग। सेत सुरतान निघुट्टिय॥
बिम्भाई भारथ्थ। बान प्रथिराज विछुट्टिय॥
ढरिय ढाल बेहाल। परिय पथ्थार मुसार॥
धन्न धंन धंन चहुआन। देव सुरलोक उचार॥
प्राक्रम्म कथ्थ संजोगि सुनि। इह दिष्षी दिष्षी न कह॥
पारस पतंग दीपक जवन। चाहुआन क्रिसान सह॥
छं०॥ १५३८॥

करन राइ कुंडलिय। समर रावल वज्जौरं॥
अनहल पुर आभन्न। राज रावत तिन भौरं॥
भोरं बुम्मिल केस। राइ कन्हर कन्हर वै॥
कूरंभी बलिभद्र। बंध आरज निड्डुर वै॥
सुरतान ढान ढुंढत फिरै। रन वज्जित प्रथिराज लहि॥
डंकिनिय दुसह दुज्जभ समर। बोलिय बिद्रम छंद कहि॥
छं०॥ १५३९॥

दूहा॥ दस सत्ता सामंत रन। देहतिय एक मसंद॥

कहर कलह बख्खहनि सुनि। है संजोगि नरिंद॥
छं० ॥ १५४० ॥

जिहि गुर पंच विपंच लहु। संत बिसोरह बंद॥
डंकिनि डंवरु डहडहिय। रन हवि दुरगम छंद॥
छं० ॥ १५४१ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ने वाले मीर योद्धाओं के नाम।

दुर्गम॥ इवि हथ्थ तथ्य असीसनं। गल कथ्थन बथ्थ ग्रहीयनं॥
भर भरनि भर सुर भारनं। झुकि झुमि होय मेछारनं॥
छं० ॥ १५४२ ॥

धर धक्कि धमिकिन धारनं। भिरि असुर सूर प्रहारनं॥
रहमान मह मद आरनं। धकि जंग पान सुधारनं॥
छं० ॥ १५४३ ॥

अलील आषुब षानयं। सारीर षां सुरतानयं॥
नौरोज षान प्रमानयं। उम्मारि गाजी षानयं॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अरि बाह ईसफ पानयं। नारिंग नोचम जानयं॥
चहुआन गहि बथ्थानयं। अविहात भूप रिसानयं॥
छं० ॥ १५४५ ॥

बलि अलूषान सषानयं। कासिम्म कायम षानयं॥
धर पंय सेरन संचवी। महमुंद जैन सुने दवी॥ छं० ॥१४४६॥
विपरी तमर भिरि मीरने। मुहिमाम षान सुंधीरने॥
अलि आल आलम काम को। आकूब सामिस नाम को॥
छं० ॥ १५४७ ॥

दूहा॥ इलि गज्जहि अज्जम सुवन। भिरि भिरि हिंदुअ मिच्छ॥
आलम बिन हिंदु आलमहि। साहन सहु ग्रह हच्छ॥
छं० ॥ १५४८ ॥

दारुंनि भैरों भूत तन। अरि गिल आलम षान॥
पुच्छि[1] पिरोज नौरोज नै। सुबर[2] चप्पो चहुआन॥छं०॥१५४९॥

(१) ए० कृ० को०—पुष्टि। (२) ए० कृ० को०—सुबर।

कवित्त॥ बान एक बाराह। पान ढाहे धर उप्पर।
करन राय कलहंत। पिनंक भिद्यौ सिर जुप्पर[1] ॥
औहट्टी हम्मीर[2]। बीर बिच्यौं बारुन बर ॥
दस मसंद लसलिग। महंत आवग्गि, करि उप्पर ॥
सोवल्लिंग सिंघ पट्टन पती। मति सुमेर सुरतान सम ॥
डंकनिय कहै संजोगि सुनि। संच पयंप्पौ सुम्मति हम ॥
छं० ॥ १५५० ॥

बेलीद्रुम ॥ डहडहति डंवर डंकिनिय। कहकहति कूकह जोगिनिय ॥
तहतहति तेग तरंगनिय। बहबहति बान बिरुहनिय ॥
छं० ॥ १५५१ ॥

हरहरति बज्जन बज्जनिय। पलपलति श्रोन पलक्कनिय ॥
धरधरति सिर बिब नंचियन। परपरति पंजुलि पंजियन ॥
छं० ॥ १५५२ ॥

कवि करत कलह न कज्जियन। रस गिरति नोपुर रंजियन ॥
श्रति राज राजन अज्जियन। .... ॥ छं० ॥ १५५३ ॥
कसि साह मार भसंदयं। इसि पार पच्छति छंदयं ॥
उड़ि हंस हंसनि इंदयं। नत[3] अच्छरी प्रभु वंदयं ॥
छं० ॥ १५५४ ॥

डंकनी का मुसलमान योद्धाओं का पराक्रम वर्णन करना।

दूहा ॥ छिति छची सह धरम। सुहह मंन समूल ॥
वीर इष्ट संभारि करि। मंडि पग्ग सम भूर[4] ॥ छं० ॥ १५५५ ॥
गाथा ॥ पति अग्गिनि विभ्भाई। वित चतुरथी समर सा बुद्ध ॥
पंचमि काल्ह सगुर भौर। कथि कविचंद साह निज धाम ॥
छं० ॥ १५५६ ॥

कवित्त ॥ आलम सा इक बान। इक बानह भुअ भेरू ॥
एक बान नारिंगनेस। जंगिय कुल केरू ॥
कचवीर सल्लान। नेज झंडे झकझोरिय ॥

(१) मो०—सरजू पर।
(२) मो०—उह।
(३) ए० कृ० को०—न।
(४) ए० कृ०—कूर।

बहु अरि अंकुरिय। तिष्ष तोरन तन तोरिय॥
हिंडोल लोल छिन छिन फिरिग। कर कमान कंदल करह॥
आरधि विलोरि सुरतान दल। मदो जाजु अतुलित वलह॥
छं०॥ १५५७॥

अतुलित महमद महि मसंद। असु असन न प्रतिभ॥
सतुलित सारथि कैर कमंध। जंबूर वह तगि॥
मतुलित मीरां महिरषान। धुक्किय धर नंषिय॥
धरपरंत सामंत। मार मारह करि हंकिथ॥
जग्गयो जुद्ध आवाज सुनि। सजि परिंत गेवर घुटिय॥
हय हय जुसह त्रिभुवन त्रिपुरि। पर विमान कुलटह छुटिय॥
छं०॥ १५५८॥

पारि हारि पीपा प्रसिद्द। सुरतान जु दिट्टिय॥
बिहिर कुंत सामंत। अंत अंतरिय सुनेट्टिय॥
पति पसाव पंडव जुरंत। हक्किय हक्कारिय॥
उल हल्ल हक्कारि। कुंद वंदन उच्छारिय॥
बल विषम सुषम स्वामित्त भितह। हित सुराज्ज रंज्यौ रनह॥
इथ बाह वाह हिंदुअ तुरक। समर ससच तुट्टिय तनह॥
छं०॥ १५५९॥

दूसासन दिट्ठिथ षंधार। आंडौ पुर पारिय॥
कीर्ति साहि उर लंषि। बीर बंवरि उच्छारिय॥
षान आन चहुआन। जोन वर धरनि पछारिय॥
रे हिंदू रे मुसलमान। भिरि भिरि पुक्कारिय॥
छंडौ जुगौइ छंडन जुगति। बर निसान बुक्क मनह॥
सकै सिंघ नाद सिंघह गुरिग। गहर गिंभ सिंघौ घनह॥
छं०॥ १५६०॥

घन थुरंत गोरिय सयन्न। पीरोज षान धपि॥
तिहि टट्टर तकि तेग। बेग झारिय झंक झंपि॥
षूब साहि साहाब। सनमान सुरंन्न॥

गहि गष्पर[1] परिहार । अत्त सम सम दुय भ्रन्निय ।
नीधक्क धाम डिग[2] मद्दर । हड्डमंस मिंडिग असनै ॥
बाजी ठमिंक करि कुथ्थरिय । जनों षारिक षलहक्क सन ॥
छं० ॥ १५६१ ॥

आनन अन जंबूर । बीर विङ्गिग धर तुट्ट्यो ॥
तब बंधु बधनौर । राइ केहरि वीर छुट्यौ ॥
गौरिय गज गुंजार । हल्लि हथ्थ हहकारिय ॥
छल पुच्छे पच्छारि । बाघ लगयौ बकारिय ॥
गहनाय गरुअ गेंबर मुरिग । ढाल हाल आलम डरिय ॥
धुम्भि अष्ट बलिय ओनह अवनि । पति पवित्र कीनी घरिय ॥
छं० ॥ १५६२ ॥

जूनां षिचइ कूट । राम रावन भर भारी ॥
समर सिंह की आन । साहि लग्यौ ग्रह कारी ॥
दान मान छुट्टै । गरुअ गेंबर गुरि हल्लिय ॥
आउं ग्रह उग्गहिय । राइ धुमि तेबर पल्लिय ॥
पर पुट्ठि दिट्ठ नयनंह पिसुन । बारर बर आय बुहहै ॥
सुरतान षान षंजर बहिग[3] । जग हथ्थह जीवत रहै ॥
छं० ॥ १५६३ ॥

हनूफाल ॥ इति अंत कालनि इच्छ । सुरतान सुच्छिय गच्छि ॥
भै भीत जननिय लच्छि । परि भूय आवलि कच्छि ॥
छं० ॥ १५६४ ॥

ईसि असद षांभ कमान । नियु नंषि दै अहुआन ॥
परिवार पारस झुझ्झि । दस दैव गति आबुझ्झि ॥
छं० ॥ १५६५ ॥

कवित्त ॥ इकतीसो आसद । मारि मस्सद महाभर ॥
दह सत्ता सामंत । सूर जंजुरिग धरा बर ॥

(१) ए० कृ० को०—पष्षर ।
(२) ए० कृ० को०—मिंडिग, मिंडिग ।
(३) ए० कृ० को०—षंगह ।

हे घायां कलहरिय । सोम जीवत उप्पारिय ॥
अग्गामी अगिवान । राज बथ्थां पच्छारिय ॥
ए बथ्थ परं दादिद्द में । भग्गा अग्गा इन हर्यौ ॥
सावन वदि पंचमि पंच कर । सांइ नेछाइन धर्यौ ॥
छं० ॥ १५६६ ॥

संयोगिता का डंकिनी से कहना कि राजा का पराक्रम कह ।

दूहा ॥ हे डंकिन भष्षिन सुजन । मंस रुधिर तम अथ्थ ॥
कहिन पराक्रम राज कौ । मीर समाहत बथ्थ ॥
छं० ॥ १५६७ ॥

के रामायन कष्पिवर । भारथ भीम न पुट्टि ॥
पिथ्थ पराक्रम पथ्थ सम । भावी देव न छुट्टि ॥
छं० ॥ १५६८ ॥

सहस सूर सामंत रन । भये छिन भिन्न सरीर ॥
उद्धि विषम सज्यौ नृपति । हय गय नरनि अरीर ॥
छं० ॥ १५६९ ॥

पृथ्वीराज की वीरता प्राक्रम और हस्तलाघवता का वर्णन ।

मोतीदाम॥ रुप्पी रन राज सुरज्जिय अच्छि । मनौं दसकंध सभा वलिबच्छ॥
रहे करि कुंडलि मिच्छ करेर । मनौं लघु पब्बय सेवहि मेर ॥
छं० ॥ १५७० ॥

महा महि गोरि समुद्द सयन्न । मनो वड़वा नल रज्जि रयन्न ॥
चिहूं दिसि चंपहि बग्ग उठाय । ते दीप पतंग ज्यों रथ्थ समाय ॥
छं० ॥ १५७१ ॥

झरप्पहि बाज ज्यौं मीर भंभार । लुहार जलं जिम बुड्डहि सोर॥
सिहइ जलइ ज्यौं भद्रव सूर । तरप्पहि बीज ज्यौं राज करूर ॥
छं० ॥ १५७२ ॥

गही कर संगिनि संभरि वार । मनौं दल दंगति दीसय सार ॥

परे दिढ मुट्ठि निहन्नत तक्कि । पराक्रम पिष्षि रहै सुर ञक्कि ॥
छं० ॥ १५७३ ॥

भरीकरि कन्न लगै तिन पार । धुवै धर यौं भर ज्यों पहतार ॥
सविद्ध हयग्गय पष्षर घाइ । लगंत गिरंत फिनंग न घाय ॥
छं० ॥ १५७४ ॥

मयंद गयंद गिरै बल फारि । लगंत निषाघ्न गिरंत चिहारि ॥
ढलंतिय ढाल सुभुंड निहारि । मनों गिरि तैं गिरि संघ वयारि ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

झुलंत अनी लगि टोप सिरक्कि । मनों रवि उड्डि उरग्ग धरक्कि ॥
करी सनयं हय हंनत तक्कि । बंगत्तर पष्षर मंझि सनक्कि ॥
छं० ॥ १५७६ ॥

मची धर धुंधि न सुझ्झि भयं नैन । श्रवन्न न सुन्निय सद्द सबैन ॥
षहक्करथं धर पुल्लन सुझ्झि झ । मनों दव दंगल गोवा लुझ्झि ॥
छं० ॥ १५७७ ॥

सिवरल रस्वांन तें अंत अलुझ्झि । मनों फंद पारधि पग्ग अकुझ्झ ॥
रही कर सिंगिनि घुट्टिय तोन । जितंत्तिते उड्डुत दिष्षिय श्रोन ॥
छं० ॥ १५७८ ॥

किरवाल कटी सुमनों डुडवारि । नंचौ कर जोगिनि पष्षर डार ॥
दुहथ्थ नहंनत हथ्थिनि सीस । मनों दल लग्गिय पव्वय दीस ॥
छं० ॥ १५७९ ॥

भसुंडनि दंतनि टूक उडंति । ससि अप्प मनों जल रत्त बुडंत ॥
उठै बहु छिंछ करी निधरन्न । मनों झर झ्रुति नंन[2] धरन्न ॥
छं० ॥ १५८० ॥

घनं जिम बज्जहि घाय घनंकि । लगै तिन यंतन तच्छ छनंकि ॥
टुट्टे पेंग है कर संगिय सज्जि । मनों बन षंड धनंजय रज्जि ॥
छं० ॥ १५८१ ॥

हनंतति तानसि नामस मच्चि । मनों बलिभद्रह लंपस पच्चि ॥

(१) मो०—दल दंग । (२) ए० कृ० को०—नीन ।

किधौं हनवंत गदा कर कीन । दुनों दस दुंदुभि रावन भिन्न ॥
छं० ॥ १५८२ ॥

रही नन अच्छरि इच्छि वरान । जय्यज्जय जंपहि देव विमान ॥
चवसठि नच्चिय रच्चिय रारि । रहे रस रच्चि षडं जटधार ॥
छं० ॥ १५८३ ॥

निरत्तहि नारद बज्जिय तंत । उभं यति साचरु भूमति भंति ॥
जुटे सब सरुजन आवध हथ्थ । वट्यौ बल राज समाहिय बथ्थ ॥
छं० ॥ १५८४ ॥

धृतें पग हथ्थ हनंत धरन्न । रजक्क सिला पट पौटि वरन्न ॥
गहे भर नंषत हथ्थिन ठेलि । मनों मद गंध चलाइ दुवेल ॥
छं० ॥ १५८५ ॥

सिरं सों सिर हक्कर हंनत दीस । ज्यों जोगिय तुम्मर फोरत सीस ॥
सहसा बढ़ि घाय सहाय ज्यों दंग । (१) इसे न्त्रप इष्ट बलं रन रंग ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

गहे न मसंद सनमुष जंग । भनो दल दानव ज्यों कपि पंग ॥

पृथ्वीराज का पकड़ कर हाथी पर बैठा गजनी लें जाना ।

करी मति घेरन हथ्थिय गंस । सुत रावन ज्यों चतुरानन प्रंसि ।
छं० ॥ १५८७ ॥

परी चिहुं कोदह घेर नरिंद । कढे कर दंत ज्यों भिल्लिय कंद ॥
सुसंग्रहि संकट सूर निसंधि । लियौ न्त्रप गोरिय साहि सुरुंधि ॥
छं० ॥ १५८८ ॥

गजेसर डारि बैठाय नरेस । चल्यौ गुरि गोरिय गज्जन देस ॥
छं० ॥ १५८९ ॥

दूहा ॥ ग्रहे राज गज्जन चल्यौ । तब रन रत्ता सूर ॥
अट्टु अरवध वज्जि अत । संघारिग भर सूर ॥
छं० ॥ १५९० ॥

कवित्त । गहत राज प्रथिराज । भोम कंपिय पायालं ॥
भि अंभर ग्रह पत्ति । पति अंमर मंतालं ॥

(१) मो०—इसे नूप इष्ट वलं च परंग ।

गै अभंग लै बंद । मत्त भग्गं अम मग्गं ॥
अरन चंपि वर पार । बीज हिंदवान द्रिपग्गा ॥
हिंदवान थंभ भग्गे उमै । समरसिंह चहुआन वर ॥
काल क सकाल प्रगट्यौ भुवी । दीज अवनि कलि भग्ग धुर ॥
छं० ॥ १५९१ ॥

दूहा ॥ भग्गे दोइ दिवान वर । सत्त भग्गा बल भग्ग ॥
चाहुआन सुरतान कर । परग बीर लग्ग ॥
छं० ॥ १५९२ ॥

गहि चहुआन नरिंद वर । षेत ढुंढि सुविहान ॥
अरि प्रथिराज नरिंद कौ । गवन जीवअग्रह थान ॥
छं० ॥ १५९३ ॥

भज्जि परी प्रथिराज ग्रहि । जमुन नीर दल सज्जि ॥
तादिन साझि गोरी ग्रहन । बज्जे मुंगल बज्जि ॥
छं० ॥ १५९४ ॥

पृथ्वीराज का बंधन सुनकर संयोगिता का सहसा प्राण त्याग देना ।

कवित्त । अनाचार परवर्यौ । पर्यौ यतिक सह भ भिभझ ॥
हाहुलि राइ हमीर । सांइ दोहौ फिर पुंभि भय ॥
सिव केसव करि भेद । भेद करि देवह नयौ ॥
पंचतत्त प्रमरत । सत्त भजि हाहंस संध्यौ ॥
पहुपंग राइ पुत्रिय सुनहि । मुरत्त बिलंब न कत्त मिलि ॥
षट मास बीस बासर विहत । लहित सोममंडल सुहलि ॥
छं० ॥ १५९५ ॥

चोटक । हलि हतानि हतति हत तिह । डवरू डहकंतति जोगिनियं ॥
भंवरी वर हंसनि हंस तिनं । फुटि रंभ्र दिसा पहप्रान विनं ॥
अलि आलिनि आलिनि सोइ सियं । .... छं० ॥ १५९६ ॥
त्रिग तंत अनंत सु संच मनं । छलही छलहंत सुहंत हनं ॥
छं० ॥ १५९७ ॥

(१) मो० मुति । (२) ए० कृ०--को० तिहि ।

पदमा पद्मा सन आसनयं । प्रिय प्रेम प्रबंध सुवासनयं ॥
भरि ध्यान उमा मनलास लयं । उडि सिद्धि अयासन आसनयं ॥
छं० ॥ १५९८ ॥

कवित्त ॥ संजोगिय आसनह । जीव जंजरिग जरिय गत ॥
पंजरीट खगराज । इंद गय हंस छिंग पति ॥
अप्प अप्प अप्पियन । सपन ज्ञंमन दिठि अप्पन ॥
न्त्रिभे राज गत काज । काज किन्नौ क्रम चप्पन ॥
चिंतिय सुचिंत डंकनि उड़िय । घुंडिय परंत परेव ग्रिह ॥
संचरिग जुद्ध सामंत दह । उगति बंध कविचंद कह ॥
छं० ॥ १५९९ ॥

न मिटै लिषित लिलाट । लिष्यौ ब्रह्मासिर अष्पर ॥
असुर गह्यौ प्रथिराज । सुनंत संजोगि मरिय घर ॥
चंद्र सूर ग्रहरिष्य । इंद्र सुर नर असुराइन ॥
सिद्ध साधक मुनि राइ । मंत तंतिय पारायन ॥
को सकै अवर आरंभ करि । जो विधिना विधि गति भन्यौ ॥
निम्मान वात जुग जुग लगै । नह दिट्ठौ मिटत सुन्यौ ॥
छं० ॥ १६०० ॥

दूहा ॥ बहु बिलाप सब मिलि करहि । तुहि सुधि बुधि गियान ॥
प्रीय बचन अप्रीय सुनि । गये संजोगिय रान ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

प्रान जात नह पल लग्यौ । सुनि संदेस विराग ॥
सुनत वचन प्रियजन कुकल । धन्नि त्रिया तो भाग ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

दह सामंत परंत रन । ग्रह उग्रह न मरंत ॥
सत्त सुराजन ग्रहत जुध । मुरि मुरि मेछ मुरंत ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

(१) मो०—बासनयं। (२) ए० कृ० को०—गत।
(३) को०—इप्पर। (४) मो०—मितन।

पृथ्वीराज के पकड़ जाने पर शाह का पड़ाव साफ करना।

कवित्त। आनि गह्यौ प्रथिराज। टट्ट ठठरिय ठुकि दल॥
धकि धार आररिय। परत वीर इह बिरद बर॥
हंसस गरुअ गोरिय गुमान। भुअबल उप्पारयौ॥
सांई काअ कुग्राम काम। धरति तिलौ तिल करि डारयौ॥
सुरतान अंग अग्रह कियौ। सुर गह संभु न दिष्पयौ॥
असमान आस असपत्ति अस। कसि पसि कंदल बिष्पयौ॥
छं० ॥ १६०४॥

कासमीर कामरूअ। टंक टंकह उप्पारयौ॥
भंड कराइ हमीर। धीर पच्छे पति पारै॥
साहि सब गिल करत। तेग भंजरिय न भिल्लत॥
छचि छचपति छच अस। भूमी गहि मिल्लित॥
आलम लुभी आलम न हुअ। आभंन असमानहि धरत॥
रस राति रसातल जाति गति। जौ न हर इत्तौ करत॥
छं० ॥ १६०५॥

पैज बलिय पाहार। दैव दहिया दल पित्तह॥
ओछौ ओघाय। घाय राजन इत उत्तह॥
चाप्य गरुअ चहुआन। राइ दैवत्तिय दिवानौ॥
परत घाइ घिंघ राइ। सहना तक्यौ सुरतानौ॥
वड व्रत्ति गत्ति: छचिन तनिय। कुल घटि बढ़ि न समान कुय॥
भंडार विघातन मुकति दिय। लुट्टन हार सलुट्टि सुय॥
छं० ॥ १६०६॥

तब राजा गोरी जवाब। दीनौ हम्मीरां॥
श्री हट्टी गंभीर। राय पहु कर पहु भीरां॥
सांभि साथ चहुआह। सांमि अड्डा संनाही॥
मा जानौ मे मिच्छ। तेक कैसी सां वाही॥

(१) ए० कृ० को०—महि।
(२) ए० कृ० को०—राइ।
(३) मो०—लिय।

रे राजपुत्त रजंग छल। पलक भान रय छंडि रहि ॥
मंडलह भेद भेदिग भुअन। उर अलोक सब्बह सुकहि ॥
छं० ॥ १६०७ ॥

दूहा ॥ भर भिरि सुर मंडल भिदै। ग्रहि लीनौ सुरतान ॥
ए तीनो सामंत ने। घर घल्लिय सुबिहान ॥
छं० ॥ १६०८ ॥

कवित्त ॥ इह भज्यौ संभरिय। बात धज्जरिय दिसा दिस ॥
राइ केलि चहुआन। समर बित्तयौ ग्रसा गस ॥
नील गात पग पीत। भीत भेरिय भुंकारिय ॥
तं बरिया दह फुट्टि। भार भक्खिय संसारिय ॥
निग्रहयौ राज सुरतान छल। रुधिर धार छवि उच्चरिय ॥
चहुआन अनावध आन नह। सु कविचंद भनियन धरिय ॥
छं० ॥ १६०९ ॥

जिहि करिवर अरि जरहि। जरयौ तिय कर तिहि कट्टति ॥
जिहि संकति मुह सकति। सकति पंज्जि न सक छंडिति ॥
जिहिं बाना बरि षान। प्रान कंपहिं मधु सिंधुर ॥
तिन मद सिंधुर सुंडि। डंड सिर छत्र चिंपति पर ॥
जिमुष सहाव संमुहन सहि। तिहि मुंष जंपत गह गुहन ॥
प्रथिराज देव दुअ नैनि ग्रह्यौ। रे लचौ गुर ग्रब्बहन ॥
छं० ॥ १६१० ॥

सूर गहंन टरि गयौ। सूर गह भयौ राज तन ॥
भारथ अर बित्तयौ। मार उत्तरयौ भुअन यन ॥
हर हरानि मंडयौ। सार संभरि तंन तुट्यौ ॥
रे हिंदू रे मुसलमान। बग्गह षल षुट्टयौ ॥
संग्रिग गवह संसार सिर। षरह संभ ग्रम्भह भरिय ॥
घन घाय साहि चहुआन दिय। गज्जनेस दिसि संचरिय ॥
छं० ॥ १६११ ॥

---

(१) मो०—छोड़ि। (२) को०—घर घल्यो।
(३) ए० कृ० को०—संभरि

पृथ्वीराज को पकड़ कर शाह का गजनी जाना और दुर्धर देवी के मंदिर से कविचंद का मुक्त होना।

गहि चाहू आन नरिंद। साह गज्जन सपत्तौ ॥
थान रेषि दिल्ली प्रमान। साहि पीरोज प्रमतौ ॥
उत पतंग बाजिच। नहसहनाय सुभेरिय ॥
जीति लियो चहुआन। दोउ दिष्षत दल फेरिय ॥
सुरतान गह्यो चहुआन बर। कबि छुट्टौ जालंध ते ॥
सपन्न सूर पत्तह दिल्ली। भौ कवि रत्त सुअं मतै ॥

छं० ॥ १६१२ ॥

दूहा ॥ तन मझ्झ बर ब्रह्म है। अच्छय उतप्पत हार ॥
लगै न जरवर फिरि सुक्रम। फिरि लग्गै सो बार ॥

छं० ॥ १६१३ ॥

चौपाई ॥ सो दिष्यान सुतब प्रमानं। नर बर बीज तुटे धर थानं ॥
सुक्रम बीज लै बिदुर[2] बर चल्ले। कु क्रम गार सिरने बहु घुल्ले ॥

छं० ॥ १६१४ ॥

ब्रह्म बीज के अच्छाह माई। भ्रम नीर रसु संत सर आई ॥
क्यौं दिन रत क्यौं तपकर धारी। क्यों क्रम क्रम यूं वारत पमांरी ॥

छं० ॥ १६१५ ॥

कबित्त। उर उकट्ठ तम दीह। सुअहि औ काल प्रान रहि ॥
जब्ब कुमत्त गलमत्त। बढत[3] मुन अंग दीप महि ॥
मोहन मत गजदेह। हरहि अंके सोए चित ॥
हग्गि कमल्लिन मनं भमर। गाढ़ बंधिय एह मित ॥
पंच जैत बर लग्ग। बीर त्यापोसु जुद्ध हिन ॥
छुरि पावस भ्रुगुलता। बंध मुगति लहै न धन ॥

छं० ॥ १६१६ ॥

देवासुर उद्दंम। भयौ उद्दंमन भारथ ॥
गवा प्रब्ब उधंम। थान उद्दंमन पारथ ॥

(१) ए०–उन। (२) मो०–बिदुर। (३) ए० कृ० को०–गढ़त।

मेंछ हिंदु उझ्भ । भयौ गोरी चहुआनह ॥
भिरत पंच दिन पंच । रत्ति बित्ती सुविहानह ॥
खिष्यिय बमिच्छ हिंदुअ बयत । षित्त इयग्गय अयुत हुछ ॥
[1]संग्राम कथन कथ्यह तनी । कहिय चंद कब्बी सुछ ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

दिल्ली में पृथ्वीराज के पकडे जाने का समाचार पहुंचना और राजपूत रमणियों का सती होना ।

कुंडलिया ॥ चर आए ढिल्लिय नयर । दसमि सुदिन अंगार ॥
बुद्धवार[2] एकादसी । चल्ली बरन सगदार ॥
चल्ली बरन सुगदार । सूर सामंत तीय वर ॥
संभु पुरिगह प्रथिराज । भयौ मंगल मंगल भार ॥
षट सुरतिय चहुआन । अग्गि आलिंगि अंगवर ॥
छंदं बंधि संजोगि । जोग संजोग कहै चर ॥ छं० ॥ १६१८ ॥
गाथा ॥ [3]चाहइ संझ रयनी । त्रुच्चति वितोह वीर वताइं ॥
दहकोह गिद्ध गोमं । रन थल थल रष्यिय पंच दीहाई ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

पृथा का रावल जी के शस्त्रों के साथ तथा और राजपूतिनियों का अपने पतियों के अस्त्रों के साथ सती होना ।

कवित्त ॥ निरषि निधन संजोगि । भियौ सज्जिय सु सामि सथ ॥
छकि हंस उत्तारि । बीर अकरिय प्रेम पथ ॥
साजि सकल श्रृंगार । हार मंडिय मुगतामनि ॥
राज भूषन हय रोहि । जलज अच्छित उछारति ॥
हइया सद्द जंपत जगत । हरि हर सुर उच्चार बं ॥
सेइ गमन सिंघ रावर चले । तजि मद्दि फूल[4] औफल सुकर ॥
छं० ॥ १६२० ॥
प्रथा सथ्य सह गवन । रवनि साजिय सुराज दह ॥
उतन कुसुम सुर बास । सिल्लिय मुष गुंज मुंज तह ॥

(१) ए० कृ० को०—संग्राम कथ्थ नथ्थह तनी । (२) मों०—बंधबीर ।
(३) मों०—उछाराहि । (४) ए० कृ० को०—महिसुष ।

मुगता मनि उच्छार । झार आयौ सु समुज्जल ॥
अंग रष्षि दुअ सत्त । तिके आवरिय अप्पहल ॥
विम्मान बान सुर अच्छरिय । प्रहुपंजलि पुज्जे सघन ॥
सुर भ्रिष्ष जष्ष तंचिय धरन । कल कौतिग देषहि सुतन ॥
छं० ॥ १६२१ ॥

सहंस पंच सह गवनि । अवर सामंत सूर भर ॥
चल्लिय मिल्लिय मन संधि । सकल निज नाह साह बर ॥
भूषन सबनि बिराजि । साजि सिंगार सैल तन ॥
मन अनंत उद्दरिय । करिय छुवि हरि जुदान दिय ॥
जहां जुध्थान मुनि प्रिय गुवज । न करि विलंब मन धरिय धुअ ॥
धमि धन्य सह आयास हुअ । लषि कौतिग अनभूत भुअ ॥
छं० ॥ १६२२ ॥

चंदन मंदिर दार । रचिय बर दिघ्घ लघ्घुदर ॥
विबुह[1] कुसुम भर रोहि । सोहि पर बसन सुरह वर ॥
जिग्य जंवू नद दाप । रथ्थ हय गय मुगता मनि ॥
बिप्प बेद उच्चाहि । धेन सुरबर आयसनि ॥
किय[2] लोक लोक अंजुलि कुसुम । सजि विमान सुर सिर भिरहि ॥
संक्रमिय अप्प साहागमुनि । मंझि गवन हव्विहि हरहि ॥
छं० ॥ १६२३ ॥

विविह तरुनि दिय दान । अवर सामंत सूर भर ॥
अप्प अप्पु हथ लीय । मिल्लिय रह हित धाम धर ॥
चित चिंत रव रवत्ति । गवनि पावक प्रज्जारिय ॥
प्रेम प्रीति किय प्रेम । नेम गेमह प्रति पारिय ॥
उज्जलिय भाल आयास मिलि । हर हर सुर हर गोम भौ ॥
जह जहां सुवास निज कंत किय । तह तहां तिय पिय मिलन भौ ॥
छं० ॥ १६२४ ॥

एकादस सें सत्त । पंच पंचास अधिकतर ॥

(१) ए० कृ० को०—विविधि ।
(२) ए० कृ० को० अदियं ।

सावन सुकल सुपष्ष। बुद्ध एकादसि बासुर ॥
बज्र बिद्धि रोहिनी। करन बालव धिक तै तल ॥
प्रहर सेष रस घटिय। आदि तिहि संकल पंच पल ॥
बिथ्थुरिय बत्त जुद्धह सयल। जोगिनि पुर वासुर बिभ्रम ॥
संपत्ति थान सरि सतिअ जुरि(१)। दृढ़ सुरब्बि कीनै विरम ॥
छं० ॥ १६२५ ॥

शाह का गजनी पहुंच कर पृथ्वीराज को हुजाब खां के सुपुर्द करना।

गहि चहुआन नरिंद। गयौ गज्जनै साहि घर ॥
दिल्लिय हय अथ द्रव्य। ताहि तन इह सुअप्पिधर ॥
बरस अड्ड तस अड्ड। अड्ड कौतै नयन बिन ॥
कुम्भ जम्म जुग अवरु। जाय प्रथिराज इक्क षिन ॥
कह्है आरै न्रपति समुझै मनह। अथ उपाय सो बहु करय ॥
तिहि धिना बिचिच निरम्यौ पटल। निमष न इक्क लिष्पित टरय ॥
छं० ॥ १६२६ ॥

तक सुसाहि गज्जनय। ग्रहियं जंगल पति तु नह ॥
हथ्थ समप्पि हुजाब। सुविधि रष्यौ कुल मानह ॥
मंडिय कोट महल्ल। अप्पि दिसि दीष्षन धामह ॥
तहां रष्षिय प्रथिराज। सुबंध रष्षक हमामह ॥
बिप्रह सुरूपि पारस्स दस। बनिय दत्त दबे समुष ॥
नन करिय गर्ज आहार कछु। कहिय तेज हुज्जाब रुष ॥
छं० ॥ १६२७ ॥

हुजाब का शाह से कहना कि पृथ्वीराज क्रूर दृष्टि से देखता है।

बिरदावलि बिरदाइ। पाय अंदू कर ढीले ॥
ताल्स पुरुवन काज। बोलि मधु वचन रसीले ॥
गढ़ गिलोल गज बाग। लागि सक्कै न डरपि उर ॥

(१) ए० कृ० को०—सर सुतिय जुरि।

नीठ नीठ रष्षयौ । अनि उभ्भौ जल ऊपर ।
नरब्दा तट कज्जली सुबर्न । जूथ हस्तिनि संभरिय ॥
पीय न उदक कबिचंद कहि । मद सिंधुर जिम बलभरिय ।
छं० ॥ १६२८ ॥

तब चिंतिय हुज्जाब । पयौ अप्पन गोरिय प्रति ॥
किय सलाम तिय वार । धरिय अंगुरि वनिय नति ॥
कीय अरज कर जोरि । सुनहु साहाब मन्नि भुअ ॥
तिन अहार चहुआन । पष्ष सारद्ध तीन हुअ ॥
कलमलिय चित्त संभलि सुचिर । अप असुपति चहुआन गहि ॥
आन्हौ निकट रस न्रिपति बरि । दिठ्ठौ, दिट्ठ करूर मय ॥
छं० ॥ १६२९ ॥

दूहा ॥ प्रथुल खंभ साला प्रथुल । संकल प्रथुल परीभ ॥
बन आरोहिय सिंघ जनु । अनुक्रम कज्ज इभ ॥
छं० ॥ १६३० ॥

शाह का पृथ्वीराज की आंखें निकलवाने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ चमकि चित्त साहाब । सुनिय चहुआन सु अष्षह ॥
बोलि हुजाब सुआब । सेष कालन समष्षह ॥
तुम कहहु चहुआन । नयन दिठ बंकन छंडय ॥
जौ बंधन बंधियौ । तौइ संमुष द्रिग मंडय ॥
सिर धारि बोल कानै फिरिय । सहस मीर मिलि अप्प वृग ॥
अस पारि तेन चहुआन गहि । बंधिय राजन काढ्ढि द्रिग ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

नेत्रहीन होने पर पृथ्वीराज का पश्चाताप करना और ईश्वर से अपने अपराधों की क्षमा मांगना।

भुजंगी ॥ परयौ बंधनं गज्जनै मेछ हथ्थं । बिचारै करी अप्प करतूति पिथ्थं ॥
हन्यौ दासि के हेत कैमास बानं । गजं षून चामंड भैरी भरानं ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

(१) ए० कृ० को०—गुदरि।
(२) ए० कृ० को०—[illegible]य।
(३) मो०—सम।

बंधे कन्ह काका चष पट्ट गाढे। बिना दोस पुंडीर से भत्त काढे॥
बरज्जंत चंद चल्यौ ह्व कनौज। तहां सूर सामंत कट्टि घट्टि फौज॥
छं० ॥ १६३३ ॥

लियें राज लोकं रमंतं सिकारं। भ्रमं केहरी कंदरा रिष्य जारं॥
रच्यौ गौर महलं लियें राजलोकं। कटे सूर सामंत कीयौ न सोकं॥
छं० ॥ १६३४ ॥

भुलानौ सरूपं भयौ काम अंधं। निसा बासरं चित्त जानौ न संधं॥
दरबार मेटी अदब्बं बड़ाई। छरी ऊपरी सीस हम्मीर राई॥
छं० ॥ १६३५ ॥

करन्नं पुजारं प्रजा पौरि आई। बरद्दाइ प्रोहित्त से विप्रराई॥
घड़ि आय सौंहायं काज घुमानं। गयौ चूकि अवसान सनमुष्प जानं॥
छं० ॥ १६३६ ॥

जहीं बुद्धि विपरीति इह होनहारं। छलं पारि सुबिहान चप्पं बिकारं॥
लवट्यौ सुदीहं रही लग्गि तारी। भले राम गोविंद गव्वापहारी॥
छं० ॥ १६३७ ॥

नहीं फूल की फूलनी नाहि नाथं। तुरत्तं तरायौ जु मालीन हाथं॥
नहीं सूर सामंत परिवार देसं। नहीं गज्ज बाजं भंडारं दिसेसं॥
छं० ॥ १६३८ ॥

नहीं पंगजा प्रान तें चित्त प्यारी। नहीं गोप महिला इतं चित्तसारं॥
नहीं विग्ग अग्गे सुनं षे परदा। नहीं झोक हम्माम गरसो सरदा॥
छं० ॥ १६३९ ॥

नहीं रसम के दुलीचे गिलम्मे। नहीं हिंगु बाटं सुवन्नं हिलम्मे॥
नहीं सौरषं रूप रंके उसीसा। नहीं पस्समी तकिये पल्लिंग पोसा॥
छं० ॥ १६४० ॥

नहीं गहियं सुष्यरी भूपि जोरा। नहीं मेन दतौन के दीप जोरा॥
नहीं डमरौ योन आवै सुगंधा। नहीं चौसरं फूल बंधे अबंधा॥
छं० ॥ १६४१ ॥

नहीं मृग्ग नयनी चरन्नं तलासै। नहीं टूक झोकी समर् उलासै॥

नहीं पातुरं पातुरं नृत्यकारी । नहीं ताल संगीत आलापचारी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥

नहीं कथ्थकं लष्य जंपै कहानी । पंयं सकरं हूत लग्गे सुहानी ॥
नहीं पासवानं षवासं हजूरी । सबै मंडली मेळ लग्गे करूरी ॥
छं० ॥ १६४३ ॥

नहीं रूपकं राग रंगं उचारं । सुनों कन्न सोवह्ह वंगं पुकारं ॥
नहीं चोम मौजं करूं लष्य दानं । नहीं भट्ट चंदं बिरद्द बषानं ॥
छं० ॥ १६४४ ॥

अषं सुंदरी के रचे चौगिरद्दं । दुनं दंग ज्यौं लग्गि देही दरद्दं ॥
कहां चालि रनं कुमारं भरत्ती । कहां कोन सीं कोन आनै निरत्ती ॥
छं० ॥ १६४५ ॥

निराधार आधार कालं तुहीं । बच्यौ संकटं आय मो जीव सोंही ॥
चलौ कंद संगाय दूरावनी कों । संभालो नहीं तौ कहा आपनी कों ॥
छं० ॥ १६४६ ॥

करै ऊंच नीचं कृतं दास काजै । भए सारथी पारथं के न लाजै ॥
प्रभू रष्षि भारथ्थ में इंड साजै । प्रहल्लाद भभ्भीषनं भूनि राजै ॥
छं० ॥ १६४७ ॥

त्रिया द्रूपदी सीत कों मेटि दुष्षं । गऊ गोप गोवर्द्धनं धारि रष्षं ॥
चरावंत धेनं बनं अग्गि लग्गी । कयौ पान दावनल होय अग्गी ॥
छं० ॥ १६४८ ॥

हन्यौ कंस राजं दियौ उग्रसेनं । प्रयौ प्रारकी पांद वे वाट्टि एनं ॥
पचास पजावे मंझारी कुमारं । उग्गाइ दूसी दास केइ हजारं ॥
छं० ॥ १६४९ ॥

नृपं आठ से बीस हज्जार पासे । जरा सिंध कौ बंदी में ते निकासे ॥
दयं अवलोकं परीषत्त चेनं । अजामेल उद्धारि राजीव नैनं ॥
छं० ॥ १६५० ॥

भए अर्जुनं नारदं स्राप दीनं । नलं कूबरं फेरि सरूपं कीनं ॥
दस्यौ पन्नगं नंद कों मग्ग जाते । दई गत्ति गंधर्व कों लात घाते ॥
छं० ॥ १६५१ ॥

दुजं दीन गोर्द्धन फिरि पच्छं आयं। फिरे कूपकं निग्ग लग्गं बसायं॥
स्वयं पूतना विष्य दातं सिराई। गऊतम्म नारी सिला कीन्हि पाई॥
छं० ॥ १६५२ ।

पढ़ावंत सूआ सुरं रघुराई। गनिक्का गयन्नं विमानं चढाई॥
जरासंध षोजी किये अग्र फौजं। फिरे तीकनं ताकि चरनं सरोजं॥
छं० ॥ १६५३ ॥

जरा नाम्म व्याघात करि घात पग्गें। मुकंदं मुकत्ती दई तीर लग्गे॥
पवारैं गिनाऊं कहां लग्गि तोरे। करौं बीनती इत्तनी हथ्थं जोरैं॥
छं० ॥ १६५४ ॥

बिसार्‌यौ न विश्वंभरं विश्व सारौ। अना अप्पराधं क्यों ज्यों बिसार्‌यौ॥
अरे होय निरदै न देषौ तमासौ। ग्रह्यौ ग्राहं ज्यों गज तांहि निकार्‌यौ॥
छं० ॥ १६५५ ॥

बिना राज आजं सरै कौन काजं। निबाहौ बिरद्दं गरीबं निवाजं॥
सदाई कहाऔ करुन्ना निधानं। करौ आसु साहाय कृहि चहुआनं॥
छं० ॥ १६५६ ॥

कला करे फेरि अय्यौ संभार्‌यौ। हरै पिच धूम्मं दियौ सो विचार्‌यौ॥
ग्रह्यौ बार बेरा सु आलंम वंदी। श्रिया माहिं अभिमान नंष्यो निकंदं॥
छं० ॥ १६५७ ॥

ग्रह्यौ तेन दिल्ली सुरं काल गत्तं। इसं मेघनादं हनूमान तत्तं॥
तिनं लंक जाली प्रजाली सुजालं। ग्रह्यौ साहि गौरी तिनं काल चालं॥
छं० ॥ १६५८ ॥

पृथ्वीराज को विष्णु भगवान का स्वप्न में दर्शन देकर समझाना।

गाथा—संभरि पाले सवदे, संभरि दीन श्री धर सुपनं॥
ब्रह्मा विश्नु महेसं, मूरती तीन एकयं देवं॥
छं० ॥ १६५९ ॥

पद्धरी॥ संभरि परि पति सवदं। संभरि जेगि श्रीधरं रामं॥
सुपनंतर दे संभं। समझायौ आय राज दिल्लीसं॥
छं० ॥ १६६० ॥

पद्धरी ॥ बिन द्रव्य भयो चहुआन रोनु । मन मंझि रोस मुझिझग परान ॥
उदास रोस घ्ंटहि नरिंद । आहार पान जल तजिग निंद ॥
छं० ॥ १६६१ ॥

रजनी सुअंत महुरत्त अंभ । देषंत दरस सुपनंत सिंभ ॥
आरोहि वृषभ सिर पंच तुंग । चंद्रहं उड सरि चर्म अंग ॥
छं० ॥ १६६२ ॥

उर रुंड उरग कंठ कालकूट । रजिभाल चंद बुध जटाजूट ॥
दुह बाह पुरि अवद्ध अप्प । रज्जियं विभूति प्रमि पार तप्प ॥
छं० ॥ १६६३ ॥

चौतीस मुंडप्रति बर तिसाल । बडवानं मद्धि झलकंत भाल ॥
इह रूप आय उच्चरयौ ईस । मम सन्निषेद्व चहुआन ईस ॥
छं० ॥ १६६४ ॥

आहारि अन्न मति होइ पीन । छुट्टी सराप पूरब प्रचीन ॥
आधारि अन्न मति छंडि मंद । उबरै आय तुहि भट्ट चंद ॥
छं० ॥ १६६५ ॥

कारन्न पोहिं तुम अग्र प्रान । मम करहु पान बल आसमान ॥
इम कहि हंस हुअ चहुआन । जग्गयौ राज मौभर[3] बिहान ॥
छं० ॥ १६६६ ॥

शाह का बेनी दत्त ब्राह्मण को पृथ्वीराज को भोजन कराने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ भौ बिहान सुबिहान । बोलि हज्जूर[1] हजाबह ॥
बेनीदत्त सुविप्र । आय सनमुष सिताबह ॥
प्रिय आयस साहीब । रहौ तुम राजन पासह ॥
सो उपाय तुम करौ । भषे जिम अन्न उदासह ॥
आए सु उभै राजन्न प्रति । बेनीदत्त सुविद्धि कहि ॥
प्रथिराज अहारो अन्न रस । हम जच्चे तुम पा[2] इह ॥
छं० ॥ १६६७ ॥

(१) ए०-हहरप्रौ । (२) [illegible] को०-पूरन प्रवीन । (३) ए० कृ० को०-मौ वर ।

बेणीदत्त का पृथ्वीराज से भोजन करन की कहना और पृथ्वीराज का स्नान करके भोजन करना।

दूहा ॥ तब बेनी दत विप्र कहि। सुनि वंधन सुविहान ॥
अब अर्साव राजन करौ। आस सांइ चहुआन ॥ छं० ॥ १६६८ ॥

कवित्त ॥ तब चिंते चितराज। संभु बर बीज संभारिय ॥
मानि कियौ आहार। तिनि सब परिकर सारिय ॥
दस वंभन रहै पास। जिन तर' भोम उधारिय ॥
करे पाक विधि विप्र। विविध व्यंजन रस कारिय ॥
जल उस्न राज असनान किय। बर रोहिय धौलह असन ॥
धरि ध्यान संभु जप निति किय। आहारे अन्नह असन ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

दूहा ॥ इति विधि विति चहुआन रहि। बर सेज्या सुभथान ॥
बर पुरान कवित्त प्रति। सुनहि बचन गुर ग्यान ॥ छं० ॥ १६७० ॥

वीरभद्र का कविचन्द के पास जाना और कवि का उससे युद्ध का हाल पूछना।

त्रोटक ॥ इति दछ्य कथा सुरथी कथियं। अलि[illegible] भंग नृमं सथयं ॥
भव राजित धूअरसं धुनियं। तन रंगित रोम रोमावलियं ॥
छं० ॥ १६७१ ॥

कर डोरुअ डक्क डमक्क कियं। बिथुरे सिर अर्क कुसुम हियं ॥
उनरात पहुन्न पराग कियं। बड़वा नल [illegible] झलं मलयं ॥
छं० ॥ १६७२ ॥

गल चंद लिलाट अमी पिसयं। पुनि डमर डौंरु [illegible] उचियं ॥
[illegible] गंग सिरोहिय कै धसियं। सिव आनब दीप जिवा [illegible] सियं ॥
छं० ॥ १६७३ ॥

पुनि बघघ चरम्म करीम जियं। पुछ उच्चत नंदिय के वछयं ॥
हुंकारत भेष लग्यो अछियं। इय चंद कवी कविता कथियं ॥
छं० ॥ १६७४ ॥

दूहा ॥ पहिचान्यौ तिहि चंद कवि । बीरभद्र सम बीर ॥
जा जुग्गिनि पुर जंगलिय । अब धरनि न रष्षै धीर ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

बीर भद्र पहिचान रजा पुछिछ बत्त चहुआन ॥
कय भारा पारथ सुमग । किम बित्यौ सुरतान ॥
छं० ॥ १६७६ ॥

वीरभद्र का युद्ध का हाल कह कर पृथ्वीराज के पकड़े जान का समाचार कहना।

भुजंगी॥ [illegible] क्रिग धक दुह कोदंड लैं मही । बग्ग दौर अग्ग न्रिप और भोरं॥
तुटै गेनं गु[illegible] होय घोर सोरं । फटै धरनि [illegible] राइ जोरं ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

धरकि सेन सम साहि धरि ढाल सीसांबरं तरकि भर भरकि मन आनदीसं॥
परयौ चिकुट गढ कूट ल[illegible]स थानं । करीय विकट दनुमाल मद्द[illegible]पानं ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

बरकि [illegible] करकि बज घोर पब्बं । भरनि सम भमभार गहि चक्र सब्बं॥
ठयौ सागरं आवरं प[illegible] । इसौ उठ्ठि चहुआन अनि आन गाजि ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

परयो सिंध धर तुट्टि आघाट बंजं । चिहु ओर सुरतान नीसान गाजं॥
मनों पंजरं बान हनुमान औपै । घनं [illegible]थ सो[illegible]स तन बीर कोपै ॥
छं० ॥ १६८० ॥

चिहु [illegible] बांह सावंत सामंत्त कढ्ढै । छतं छक्क उड्डि छिल्लि पुत्र भीर पढ्ढै
सुतं ईस उम्मा [illegible]भद्र भाष्यं ॥भरं भीषमं द्रोन भारथ्थ, पथ्यं ॥
छं० ॥ १६८१ ॥

परयो कुमि [illegible] मांहि चहुआन ऐसौ । घिरे बंनरं बीर नीरं हनसौ ॥
परें पंच शिवमोल जरि कंठ दूषे । तहां चंद ठट्टो उरं माल दिष्षे ॥
छं० ॥ १६८२ ॥

बलीभद्र जैत जदों जाम सिंघं । भरं चामंड पावसं बीर बंधं ॥

(१) मो०-किप्रभु । (२) ए० कृ० को०—चिहु बांह सावंत सामंत कढ्ढ ।
(३) ए० कृ० को०—[illegible]

रनं बग्गरी देव गुर राज रामं । तनं लोह षोहंन छीहान तामं ॥
छं० ॥ १६८३ ॥

परस्संग आरब्भ पूजा पहारं । घंटं घाट संग्राम बंकट्ट धारं ॥
कारन कुंडली राइ अनभंग भारे । जुरे जाजु आवाज चयलोक नारे ॥
छं० ॥ १६८४ ॥

अरे सुंधुलं सोषियं श्रोन कंठं । परीहार पीपा हरं माल संठं ॥
परे सत्त दह सूर सामंत षग्गे । ग्रहं भान जिम मीर निद्दकोद अग्गे ॥
छं० ॥ १६८५ ॥

सुनिय चंद भारिहनेन जल [illegible] सोषं । गहै दिष्षि सम देव सुरतान घोषं ॥
छं० ॥ [illegible]६ ॥

दूहा ॥ कहै बीर [illegible] हिन्दु गुरव[1] । सुनि कविचंद सुजान ॥
बार सावन पंचमि दिवस । गह्यौ मेछ चहुआन ॥ छं० ॥ १६८७ ॥

युद्ध में मृत सामंत एवं रावत योद्धाओं की नामावली ।

पद्धरी ॥ सुनि चंद भट्ट कहै भद्र बीर । परि सुभट [illegible] चहुआन धीर ॥
पति चित्र कोट परि समर राव । दस तीन सहस अरि करन घाव ॥
छं० ॥ १६८८ ॥

चामंड राव परि दंत दाह । जदु जाम [illegible] आजान बाह ॥
[illegible]रंभ राव बलिभद्र बीर । पामार [illegible] भुमि [illegible] धीर ॥
छं० ॥ १६८९ ॥

परसंग राइ षीची प्रचंड । बग्गरी देव अरि पारि ठंडि ॥
परि राव कोज गुर राम राज । सक सिलह दार सारंग साज ॥
छं० ॥ १६९० ॥

[illegible] धार परिहार षेत । गुज्जर[2] राव परि स्वामिहेत ॥
साहाब सेन करि हूम सोम । [illegible] तार [illegible] थाम ॥
छं० ॥ १६९१ ॥

मुरि मुगध षेत जिन स्वामि जीन । बिन जुद्ध बुद्ध जो[3] बुद्ध हीन ॥
संकरह सिंघ गोरी सुराव । बिन लोह छोह छंड्यौ पराव ॥
छं० ॥ १६९२ ॥

(१) मो०—चरित । (२) ए० कृ० को० परि [illegible] जुद्ध राजि स्वामि हित ।
(३) ए० कृ० को०—को ।

कवित्त ॥ परम हंस फुल बंस । राम वाशिष्ट मंत्र मुनि ॥
अवधि राज रघुबीर । न[ि]रिय सभ मंडि छच धूनि ॥
छिन नरिंद लहि निं[द] । भयौ चंडाल परस तहं ॥
न[हु]ष [अ]न[ु] कुत्र सुहि[त] । मुहि सु लग्यौ कलंक इह ॥
जाग्रत जोग दिय्यो सुपन । नकरि चंद सनमंघ्र दुष ॥
संचरिय लो[क] सोका[?] वसन[1] । कह कविंद्र लभ्भिय समुष[2] ॥
छं० ॥ १७०५ ॥

[लो]क लोक संसार । [3]मिटै [आ]व[न स]र ब्रत्त कह ॥
तु[च्छ ज]ागद जट पुच । ग्यान गोरष्ष [चि]त्त लह ॥
हो म[ह] [ग]च्छ माया समंद । तिर तह त[न] [ब]ुडिय ॥
हरि तरंड लागंत । [छ]ोड कंदल सों जुड्डिय ॥
बीराधि बीर जंप[ै]इ स[ु]गुरु । जहां मुजीव दुष्पन लहै ॥
देवाधि क्रम्म [ब]ुल्लय कमल । तो सिव पुच सज्जिय[4] दहै ॥
छं० ॥ १७०६ ॥

[त्र]य [क]ो[द] भ[ू]पति चसंग । बाचिष्ट बुलायौ ॥
विस्वामि[च] [?]ो समर । पर्‌यौ अंटो नह आयौ ॥
नेम [त]ि[थ] मष मंडि । मन्यौ वाचिष्ट लोपि गुरु ॥
आप दियौ करि कोप । [भ]यौ चंडाल भूप डरु ॥
तप जोर ओर दिस लोक रचि । विस्वामिच पद इंद्र दिय ॥
[क]ही वीरभद्र कविचंद सम । च्यार जुग्ग लगि [?] किय ॥
छं० ॥ १७०७ ॥

विस्वा[म]ि[च] तिहि रचिय । साप तरवर लय मानुष ॥
मात स[म]य जिम कुसुम । प्रफुल्लि तन पाय महा दुष ॥
नव [र]स [क]ात विलास । धरे उर अंदर मच्छर ॥
संझ परत कुम्हिलात । कहत बहु जिए संवच्छर ॥
तुम तौ नरिंद रा[ज]स भुगति । बहुत दिवस मृत लोक महि ॥
[सं]ताप सोक म[न]ा तजहु । बीरभद्र समझाय कहि ॥
छं० ॥ १७०८ ॥

(१) [ए]० कृ० को[०]—सवन । (२) मो०-सुरुष ।
(३) [ए]० कृ० को०—मिटै आवन सर ब्रत कह । (४) ए०-सज्जिय ।